Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 3 | अंक 5

साप्ताहिक क़ादियान

# बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

1 फरवरी 2018 ई. 14 जमादीउल अव्वल 1439 हिजरी कमरी

**अख़बार-ए-अहमदिया**

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

**जब तक ज़िन्दा ख़ुदा की ज़िन्दा ताकतें इंसान देख नहीं लेता शैतान उस के दिल से नहीं निकलता और न सच्ची तौहीद उस के दिल में दाख़िल होती है और न विश्वास के रूप से ख़ुदा तआला की हस्ती का मानने वाला हो सकता है और यह शुद्ध और परिपूर्ण तौहीद केवल आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के द्वारा ही मिल सकती है।**

## उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

निश्चित रूप से समझो कि तौहीद केवल नबी के द्वारा ही मिल सकती हैं, जैसा कि हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अरब के नास्तिकों धर्म से विमुखों को हज़ारों आसमानी निशान दिखा कर ख़ुदा तआला की हस्ती का मानने वाला बनाया था और अब तक आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पूर्ण और सच्ची पैरवी करने वाले उन निशानों को नास्तिकों के सामने पेश करते हैं बात यही सच्ची है कि जब तक ज़िन्दा ख़ुदा की ज़िन्दा ताकतें इंसान देख नहीं लेता शैतान उस के दिल से नहीं निकलता और न सच्ची तौहीद उस के दिल में दाख़िल होती है और न विश्वास के रूप से ख़ुदा तआला की हस्ती का मानने वाला हो सकता है और यह शुद्ध और परिपूर्ण तौहीद केवल आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के द्वारा ही मिल सकती है।

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी ख़ज़ायन, खंड 22, पृष्ठ 121)

☆ ☆ ☆

## 123 वें जलसा सालाना कादियान की संक्षिप्त रिपोर्ट ( जलसा सालाना के आरम्भ से 126वां साल)

## अहमदियत के केन्द्र कादियान दरुल-अमान में 123 वें जलसा सालाना का सफल आयोजन।

**☆ मुस्लिम टेलीविज़न अहमदिया इन्टरनेशनल के द्वारा हज़रत अमीरुल-मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के जलसा में शामिल होने वालों को ईमान वर्धक समापन ख़िताब। ☆ देशों का प्रतिनिधित्व, 20,048 अहमदियत के परवानों का जलसा में शामिल होना। ☆ हुज़ूर अनवर के समापन सत्र के अवसर पर लंदन में 5,300 अहमदियत के परवानों का शामिल होना। ☆ नमाज़ तहज्जुद, ☆ दर्सुल कुरआन और ज़िक्र से परिपूर्ण वातावरण ☆ उलमा की महत्त्वपूर्ण तकरीरें, ☆ सर्व धर्म सम्मेलन का आयोजन, सम्माननीय मेहमानों की परिचयात्मक तकारीरें ☆ घरेलू और विदेशी भाषाओं में अनुवाद ☆ जमाअत के दोस्तों की जानकारी में वृद्धि के लिसए प्रशिक्षण पर आधारित डॉक्यूमेंट्री और विभिन्न जानकारीपूर्ण प्रदर्शनियों का आयोजन। ☆ 32 निकाहों का एलान ☆ प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में जलसा की कवरेज ☆ शांत और सुखद मौसम में जलसा की सभी कार्रवाई की तकमील। 20 से 22 दिसंबर अरबी कार्यक्रम "इस्मउ सौतस्समा जाअल मसीह जाअल मसीह" का कादियान के एम टी ए से सीधा प्रसारण , 3 से 5 जनवरी The Messiah of the Age के विषय पर अफ़्रीका के लिए लाइव कार्यक्रम का प्रसारण**

अल्हम्दो लिल्लाह कि जलसा सालाना कादियान बुस्तान अहमद के व्यापक परिसर में दिनांक 29,30,31 दिसंबर 2017 ई को आयोजित हुआ। दुनिया भर के 44 देशों के लोगों ने इस जलसा में भाग लिया और कुल हाज़री 20,000 थी जलसा की तैयारी बहुत लंबे समय पहले से शुरू हो जाती है। मार्गों और सड़कों को साफ सुथरा किया गया । बिजली तथा प्रकाश का प्रबन्ध करने वालों की तरफ से और सड़कों को रौशन किया गया। बहिश्ती मकबरा,दारुल मसीह, मस्जिद मुबारक, मस्जिदे अक्सा और मिनारतुल मसीह बिजली के बल्बों से दुल्हन की तरह सजाया गया जिस का दृश्य बहुत ही आदरणीय और आकर्षक था। एक सप्ताह पहले से ही मेहमानों का आगमन शुरू हो गया और ज्यों-ज्यों जलसा करीब आता गया कादियान दारुल अमान की रौनक बढ़ाने लगीं। यहां तक कि जलासा के दिनों में, मेहमानों के भीड़ से इस की रौनक में चार चांद लग गए।

**जलसा के कारकुनों (सेवकों) का निरीक्षण**

दिनांक 25 दिसंबर 2017 ई को जलसा सालाना 2017 के सिलसिले में आदरणीय मौलाना मुहम्मद इनाम ग़ौरी साहिब नाज़िर आला सदर अंजुमन अहमदिया कादियान ने सैयदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रहिकल अज़ीज़ की स्वीकृति से बतौर प्रतिनिधि हुज़ूर अनवर कार्यकर्ताओं का निरीक्षण किया।

सुबह ठीक 10: 30 बजे जलसा गाह बुस्तान अहमद में कार्यकर्ताओं के निरीक्षण समारोह का आयोजन हुआ। सबसे पहले,हुज़ूर अनवर के प्रतिनिधि ने नाज़मीन तथा मेहमान नवाज़ों से हाथ मिलाया। समारोह का आरम्भ कुरआन मजीद की तिलावत से हुआ। जो आदरणीय मुकर्रम मौलवी मुरशद अहमद डार साहिब ने की और अनुवाद प्रस्तुत किया। बाद में नाज़िर आला साहिब ने अपने संबोधन में कहा कि सभी कार्यकर्ता एक

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

तरह से मशीन के पार्टस हैं, जब तक सभी पार्टस सही रंग में काम करते रहेंगे सभी प्रणाली सही रहेगी। जलसा सालाना सभी कामों को उत्तम रंग में पूरा करने के लिए दो दर्जन से अधिक विभाग बनाया गए थे

इस समारोह में सभी विभागों के आयोजकों और प्रतिनिधि मौजूद थे। मुकर्रम नाज़िर आला साहिब ने कहा कि यह समारोह यानी निरीक्षण कार्यकर्ता सिलसिला की महत्वपूर्ण परंपराओं में से है। हुज़ूर अनवर जहां उपस्थिति होते हैं, तो स्वयं निरीक्षण करते हैं और अन्य स्थानों पर अपने प्रतिनिधि निर्धारत करते हैं

आपने कारकुनों को यह सलाह दी कि सारे कारकुनों को उनके ड्यूटियों पर हाज़िर रहना चाहिए। यदि आप लंबे समय तक जागते हैं, तो सुबह नमाज़ में ज़रूर हाज़िर हों और नमाज़ओं पर जोर देना चाहिए। अगर अल्लाह तआला ख़ुश होगा तो मेहमान भी ख़ुश होंगे। आप ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों के हवाले से मेहमान नवाज़ी के महत्व पर प्रकाश डाला और सैयदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बनस्रेहिल अज़ीज़ के मेहमान नवाज़ी संबंधित महत्त्वपूर्ण उपदेश पढ़कर सुनाए।

इस समारोह में मुकरम शोएब अहमद साहिब (अफसर जलसा सालाना), आदरणीय मुज़फ़्फ़र अहमद नासिर साहिब (अफसर जलसा गाह) और आदरणीय के तारिक अहमद साहिब (असफर ख़िदमते ख़लक) और सभी उप अधिकारी मंच पर मौजूद थे और सभी नाज़मीन और मेहमान नवाज़ अपने प्रतिनिधि और अपने विभागों की कतार में खड़े थे।

लगभग 20 मिनट के भाषण के बाद ,आदरणीय नाज़िर आला साहिब ने दुआ करवाई और समारोह समाप्त कर दिया। समारोह के अंत के बाद आदरणीय नाज़िर आला साहिब ने तफसील के साथ जलसा गाह ,ठहरने के स्थानों और अन्य व्यवस्थाओं का जायजा लिया।

**(29 दिसंबर 2017 ई) उद्घाटन सत्र**

दूरदराज़ से पधारने वाले अहमदियत के आशिक सुबह जल्दी ही जलसा गाह के परिसर में आकर बैठने लगे और दिल में दुआएं करते रहे और ईमान के जोश से नारे तकबीर अल्लाह अकबर कह रहे थे। यह दृश्य बहुत ईमान वर्धक था।

**झंडा फहराना**

जमाअत की परंपराओं के अनुसार एक सुरक्षित सन्दूक में ख़ुद्दामुल अहमदियत की सुरक्षा में लिवाए अहमदियत, जलसा गाह में लाया गया। मुकर्रम हाफिज़ मख़दूम शरीफ साहिब नाज़िर नश्रो इशाअत कादियान, आदरणीय वसीम अहमद सिद्दीकी साहिब नाज़िर बैयतुल माल आमद, आदरणीय मुहम्मद नसीम ख़ान वकील तबशीर, आदरणीय मौलाना इनायतुलाल्लाह एडीशनल नाज़िर इस्लाह व इर्शाद तालीमुल कुरआन व वक्फे आरज़ी, आदरणीय ज़ैनुद्दीन हामिद साहिब सदर मजलिस अनसारुल्लाह भारत, आदरणीय के तारिक अहमद साहिब सदर मजलिस ख़ुद्दाम अहमदिया भारत भी लिंवाए अहमदियत के साथ मौजूद थे।

सुबह ठीक 10 बजकर 8 मिनट मोहतरम मौलाना जलालुद्दीन नैयर साहिब सदर सदर अंजुमन अहमदिया कादियान ने लिसवाए अहमदियत लहराया और सामूहिक दुआ करवाई । ध्वज आरोहण के अवसर पर मंच से लाऊड स्पीकर से رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ وَتُبْ عَلَيْنَا اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ की दुआऐं दुवहराई जा रही थीं और जलसा गाह में मौजूद दर्शकों ने इन दुआओं को पूरे जोश और विनय के साथ दोहराया।

मुहतरम मौलाना जलालुद्दीन नय्यर साहिब सदर सदर अंजुमन अहमदिया कादियान की अध्यक्षता में पहली बैठक का आरम्भ तिलावत कुरआन से हुआ जो आदरणीय मुरशिद अहमद डार साहिब मुरब्बी सिलसिला नज़ारत इस्लाहो व इर्शाद तालीमुल कुरआन वक्फ आरज़ी ने की। आप ने सूर: अन्नमल की आयात 61 से 65 पढ़कर सुनाई और उर्दू अनुवाद भी पेश किया।

बाद में आदरणीया सदर इजलास ने उद्घाटन भाषण देते हुए कहा कि आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आवाज़ पर लब्बैक कहते हुए केवल अल्लाह तआला के लिए यहाँ आए हैं इसके लिए मैं आप सभी को बधाई प्रस्तुत करता हूं। आप ने जलसा सालाना के उद्देश्य वर्णन करते हुए बताया कि जलसा के संबंध में सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ईमान वर्धक उपदेश प्रस्तुत फरमाए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

इस जलसा को मामूली मानवीय जलसों की तरह विचार न करो । यह वह बात है जिसका शुद्ध अल्लाह तआला के समर्थन और सत्य आधार है। इस सिलसिला की मुख्य ईंट सर्वशक्तिमान ईश्वर ने अपने हाथ से रखी है और इसके लिए क़ौमें तैय्यार हैं जो जल्द ही इसमें आ मिलेंगी क्योंकि यह सर्वशक्तिमान का कराम है जिसके आगे कोई बात अनहोनी नहीं।

इस जलसा से उद्देश्य और मूल मतलब यह था कि हमारी जमाअत के लोग किसी तरह बार बार की मुलाकातों से एक ऐसा बदलाव अपने अंदर पैदा करें कि उनके दिल आख़रित की तरफ पूरी तरह से झुक जाएं और उनके अंदर सर्वशक्तिमान ईश्वर का भय पैदा हो और ज़ुहद और नेकी और भक्ति और परहेज़गारी और नरम दिली और आपसी प्यार और भाईचारा में दूसरों के लिए एक नमूना बन जाएं और नम्रता और विनय और नेकी उनमें पैदा हो और धार्मिक अभियानों के लिए गतिविधि अपनाए।

इस जलसा में ऐसे तथ्य और मआरिफ़ के सुनाने का शुग़ल रहेगा जो ईमान और यकीन और अनुभूति को विकसित करने के लिए आवश्यक हैं और एक अस्थायी लाभ इन जलसों में यह भी होगा कि हर एक नए साल में जितने भाई इस जमाअत में प्रवेश होंगे वह नियत तारीख़ पर उपस्थित होकर अपने पहले भाइयों का मुंह देख लेंगे और अवगत होकर आपस में रिश्ता भाईचारा व परिचय विकासित होता रहेगा।

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने 1905 में वसीयत की प्रणाली का आगाज़ फ़रमाया जिसका मुख्य उद्देश्य यही था कि एक पवित्र जमाअत का समूह स्थापित हो आप ने सय्यदना हज़रत ख़लीफातुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के एक इरशाद के हवाले से कहा कि वसीयत की प्रणाली ख़ुदा तआला की नज़दीकी पाने का एक माध्यम है। आप ने सैयदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह अन्हो के एक उपदेश के हवाले से बतया कि वसीयत का निज़ाम ख़ुदा तआला का कुर्ब पाने का एक माध्यम है। आप ने सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह के एक उपदेश निज़ामे नौ के हवाले से भी निज़ामें वसीयत के बारे में बताया।

इस के बाद नूर हस्पताल कादियान की सौ वर्ष की सेवाओं पर आधारित अन्नूर के नाम से प्रकाशित एक सोवेनियर की रस्म इजरा हुई। मुकर्रम मौलाना मुहम्मद हमीद कौसर साहिब नाज़िर दावत इलल्लाह मर्कज़िया ने नूर अस्पताल कादियान की सेवाओं के संदर्भ से सोवेनियर का परिचय करवाया। सदर जलसा आदरणीय मौलाना जलालुद्दीन नैयर साहिब सदर सदर अंजुमन अहमदिया कादियान ने सोवेनियर का शुभारंभ फरमाया जबकि आप के साथ आदरणीय शीराज़ अहमद साहिब एडिशनल नाज़िर आला दक्षिण भारत और आदरणीय डॉक्टर तारिक अहमद साहिब प्रशासक नूर हस्पताल कादियान भी मौजूद थे। बाद में सदर जलसा ने दुआ करवाई।

**पहला दिन -**

उद्घाटन समारोह के बाद पहला सत्र शुरू किया गया । आदरणीय तनवीर अहमद नासिर साहिब उप संपादक साप्ताहिक बद्र कादियान ने निहायत ख़ुश अलहानी से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम का निम्नलिखित कलाम पढ़कर सुनाया।

लोगो सुनो ! कि ज़िन्दा ख़ुदा वह ख़ुदा नहीं
जिस में हमेशा आदते कुदरत नुमा नहीं।

* उसके बाद सत्र का पहला भाषण आदरणीय मौलाना मुहम्मद करीमुद्दीन साहिब शाहिद सदर कज़ा बोर्ड कादियान ने 'हस्ती बारी तआला' '(इस्लाम एक जीवित ख़ुदा की धारणा प्रस्तुत करता है) शीर्षक से की।

आप ने सूर: अल्बकरह: आयत 256 यानी आयतल कुर्सी पढ़ने के बाद कहा कि आज दुनिया में जितने भी धर्म पाए जाते हैं उन सब के आधार ख़ुदा तआला की हस्ती पर ही स्थापित है। ज़माना गुज़रने के साथ साथ धर्मों में अल्लाह की ज़ात पर विश्वास केवल एक औपचारिक बात बनकर रह गई।भौतिकता और प्रौद्योगिकी के जहर ने उनके अल्लाह पर ईमान को चकनाचूर कर दिया। सूर: अन्कबूत आयत 70 के अनुसार जो भी अल्लाह की राह में मुजाहिद: करता है, जीवित खुदा जीवित तजल्लियात उन पर प्रकट होती हैं। आप ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम और खुल्फाए किराम के उपदेशों के प्रकाश में बताया कि आज हस्ती बारी तआला के जीवित सबूत इस्लाम से ही मिलता है।

कोई मज़हब नहीं ऐसा कि निशां दिखलाए
यह समर बाग़े मुहम्मद से ही खाया हम ने

फिर आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की प्रामाणिकता में प्रकट होने वाले निशान 'प्लेग' का विस्तार से ज़िक्र फरमाया। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उदाहरण वर्णन किए कि कैसे अल्लाह तआला का महान समर्थन और नुसरत उनके साथ रहा और अल्लाह तआला का कैसा भव्य व्यवहार इन नबियों के साथ रहा जिन्होंने अल्लाह तआला की हस्ती का ज़िन्दा सबूत दुनिया को पहुँचाया। अंत में आप ने सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का यह इरशाद प्रस्तुत किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला फरमाते हैं: अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ दे कि हम जीवित ख़ुदा का संदेश इस ज़माने के इमाम और

पृष्ठ 7 पर शेष

## ख़ुत्बः जुमअः

# कुरआन मजीद, आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसों और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों और इतिहासिक घटनाओं के हवाले से आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा के उच्च स्थान और उन के ईमान, श्रद्धा, वफादारी और अल्लाह तआला की ख़ुशी को प्राप्त करने ले लिए अच्छे आचरण के उच्च स्तरों का वर्णन और उन पवित्र रोशन उदाहरणों जमाअत के लोगों को उन नमूनों को अपनाने और उन के पद चिन्हों पर चलने की ताकीदी नसीहतें।

**ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 15 दिसंबर 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.**

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ. أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ. اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

وَ السّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَ الْاَنْصَارِ وَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ رَضُوْا عَنْهُ وَ اَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ

(सूरह अत्तौबः 100)

और मुहाजरीन और अंसार से बढ़त ले जाने वाले और वे लोग जिन्होंने अच्छे कर्मों के साथ उनका पालन किया अल्लाह तआला उनसे राज़ी हो गया और वे उससे राज़ी हो गए और उसने उनके लिए ऐसी जन्नतें तैय्यार की हैं जिन के दामन में नहरें बहती हैं और वे सदैव उन में रहने वाले हैं ये बहुत महान सफलता है।

इस आयत में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा का ज़िक्र है जो आगे बढ़ने वाले हैं जो आध्यात्मिक स्तर में सबसे ऊपर हैं और अपने ईमान के मानकों और अल्लाह तआला की शिक्षा के अनुसार कार्रवाई करने वालों में बाकी सब पीछे छोड़ने वाले हैं। ये लोग हैं जो सबसे पहले ईमान लाए और दूसरों के लिए, बाद में आने वालों के लिए अपने उदाहरण नमूना के रूप में छोड़ गए, ताकि दूसरे उन के नमूनों का अनुकरण करें। अत: अल्लाह तआला ने यहां सहाबा को बाद में आने वालों के लिए एक अनुकरण योग्य नमूना बनाया है। और एलान फरमाया है कि अल्लाह तआला इन के ईमान के स्तर और कर्मों से राज़ी हो गया है जो वे करते हैं और उन्होंने भा अल्लाह तआला की ख़ुशी को प्राप्त करना अपनी ज़िन्दगी का उद्देश्य बनाया। बहरहाल वे अल्लाह तआला का शुक्र करने वालों में शामिल रहे। अत: अल्लाह तआला फरमाता हैं कि जो भी उन नमूनों पर चलते रहेंगे, ईमान श्रद्धा, वफा और अच्छे कर्म करते रहेंगे वे अल्लाह तआला के इनामों को प्राप्त।

अल्लाह तआला ने सहाबा के ऊंचे स्थान के विषय में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बताते हुए उनके अनुसरण को हिदायत प्राप्त करने का माध्यम बनाया है। अत: एक हदीस में आता है। हज़रत उमर रज़ि अल्लाह तआला ब्यान करते हैं कि मैंने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह फरमाते हुए सुना। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह फरमाया कि मैंने अपने सहाबा के मतभेद के विषय में अल्लाह तआला से सवाल किया तो अल्लाह तआला ने मेरी ओर वह्यी की कि हे मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) तेरे सहाबा का मेरे निकट ऐसा स्थान है जैसे आसमान में सितारे तारे हैं कुछ कुछ से चमकदार होते हैं लेकिन प्रकाश प्रत्येक में मौजूद होता है। अत: जिस ने तेरे किसी सहाबी का अनुकरण किया मेरे निकट वह हिदायत पाने वाला होगा। (अल्लाह तआला के निकट वह हिदायत पाने वाला होगा।)

(मिरकातुल मफ़ातीह शरह मिशक़ात जिल्द 11 पृष्ठ 162-163 किताबुल मनाकिब अध्याय मनाक़िब सहाबा हदीस 6018 मुद्रित दारुल कुतुब इलमिया बैरूत 2001 ई)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहो अन्हो ने यह भी फरमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मेरे सहाबा सितारों की तरह हैं उनमें से जिस की भी तुम अनुकरण करोगे हिदायत पा जाओगे।

अत: अल्लाह तआला ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा को यह स्थान प्रदान फरमाया है। उन में से प्रत्येक हमारे लिए एक मार्ग दर्शक है सहाबा के स्थान और स्तर और अल्लाह तआला के उनसे राज़ी होने का उल्लेख फरमाते हुए एक जगह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि:

"सहाबा किराम ने अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के रास्ते में वह सच्चाई दिखाई कि उन्हें रज़ि अल्लाह अन्हुम व रज़ू की आवाज़ आ गई। यह उच्च स्तर का स्थान है जो सहाबा को मिला। अर्थात अल्लाह तआला उनसे राज़ी हो गया और वे अल्लाह तआला से राज़ी हो गए। इस स्थान की चरम और पूर्णता शब्दों में अदा नहीं की जा सकती "। (क्या ख़ूबियां और कितने कमाल हैं इसके? शब्द उन्हें वर्णन करने में असमर्थ हैं।) फरमाया कि " अल्लाह तआला से प्रसन्न हो जाना व्यक्ति का काम नहीं बल्कि यह भरोसा, तबत्तुल और खुशी और मान्यता का उच्च स्थान है जहां पहुंच कर इंसान को किसी प्रकार का शिकवा शिकायत अपने मौला से नहीं रहती और अल्लाह तआला का अपने बन्दे से प्रसन्न होना यह बंदे के पूर्णता सिदक और सच्चाई और उन्नत पवित्रता और शुद्धता और पूर्णता आज्ञाकारिता पर आधारित है "। फरमाया कि "जिस से ज्ञात होता है कि सहाबा ने मअरफत और सुलूक के सारे स्तर तय कर लिए थे। ........."

फिर इस को समझाते हुए आप फरमाते हैं:

" ...... तुम अपने दिल को शुद्ध करो कि मौला करीम तुम से प्रसन्न हो जाए। " हमें नसीहत फरमाते हैं " और तुम उससे सहमत हो जाओ।" (अर्थात अल्लाह तआला से कभी किसी प्रकार का शिकवा न रहे। और अल्लाह तआला को राज़ी करने के लिए अपने सच्चे सत्य और वफादारी को भी पूर्णता तक पहुंचाना है। अपनी पवित्रता के स्तर को भी उच्च गुणवत्ता तक पहुंचाना है। शुद्धता को भी उच्च गुणवत्ता तक लेकर जाना है। और आज्ञाकारिता के उच्च मानक स्थापित करने हैं। फरमाया कि तुम उस से और वह तुम से सहमत हो जाए। ये बातें होंगी तो मौला करीम राज़ी होगा।) "और तुम उस से राज़ी हो जाओगे फिर वह तुम्हारे शरीर में तुम्हारी बातों में..... बरकत रख देगा। ... ।"

(मल्फ़ूज़ात खंड 8 पृष्ठ 13 9-140 संस्करण 1985 यु.के)

जब यह स्थान प्राप्त हो जाता है, तो फिर बरकत प्राप्त होती है। अत: सहाबा हमारे लिए एक नमूना हैं यदि हम ने अल्लाह तआला के करीब जाना है। उन के यदि आपस में मतभेद कहीं नज़र भी आते हैं, तब भी अल्लाह तआला ने उन्हें एअनुकरण योग्य और उज्ज्वल सितारा का नाम ही दिया है। और उज्ज्वल सितारा ही बताया गया है।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक अवसर पर अपने सहाबा के स्थान का वर्णन करते हुए फरमाते हैं कि मेरे सहाबा के बारे में अल्लाह तआला के भय से काम लिया करो। उन्हें लांछन का निशाना न बनाना। जो आदमी उन से मुहब्बत करेगा तो वास्तव में मेरे प्यार के कारण ऐसा करेगा और जो व्यक्ति उन से द्वेष करेगा

करेगा जो वास्तव में मुझ से द्वेष के कारण से उन से द्वेष करेगा। जो आदमी उन को दु:ख देगा उसने मुझे दु:ख दिया और जिसने मुझे दु:ख दिया उसने अल्लाह तआला को दु:ख दिया और जिसने अल्लाह तआला को दु:ख दिया और नाराज़ किया तो जाहिर है कि वह अल्लाह तआला की गिरफ्त में है। "

(सुनन अत्त-तिरमज़ी अबवाबुल मनाकिब हदीस 3862)

फिर एक जगह आप फरमाते हैं कि: "मेरे सहाबा को बुरा भला मत कहना।" हमारे मुस्लिमों, में जो फिर्के हैं विशेष रूप से शिया ये जब एक दूसरे पर आरोप लगाते हैं तो वे सहाबा के बारे में बहुत कुछ फरमाते हैं। फरमाया कि "बुरा भला मत कहना इन के किसी कार्यों पर आलोचना न करना ख़ुदा की कसम! जिसके हाथ में मेरी जान है अगर तुम उहद पहाड़ के बराबर भी सोना सदका करो तो भी तुम्हें इतना इनाम और सवाब नहीं मिलेगा जितना उन्हें एक मुद(एक पैमाने का नाम है।) या आधे मुद के बराबर खर्च करने पर मिला था। "

(सही अल-बुख़ारी हदीस 3673)

तो ये वे लोग हैं जिनका स्थान और सम्मान बहुत उंचा है और हमारे लिए नमूना हैं। यदि हमें अल्लाह तआला की ख़ुशी प्राप्त करनी है, तो हमें उनके पीछे चलना होगा। बजाय इस के कि किसी के विरुद्ध कुछ बात की जाए या किसी के बारे में भी दिमाग़ में कोई विचार आए। और किसी के स्तर को हम अपने बनाए हुए मानकों के अनुसार परखने की कोशिश करें। ये गलत तरीके हैं।

हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सहाबा के स्थान और सम्मान का और का अधिक एहसास कराते हुए फरमाते हैं कि

"इंसाफ की नज़र से देखा जाए कि हमारे हादी अकमल के सहाबा ने अपने ख़ुदा और रसूल के लिए क्या कुरबानियां कीं। निर्वासित हुए। अत्याचार सहे। विभिन्न प्रकार की पीड़ाएं सहन कीं परन्तु वफादारी और सच्चाई के साथ कदम आगे बढ़ाते गए। अत: वह क्या बात थी जिस ने उन्हें ऐसा वफादार बना दिया? वह सच्ची ईलाही मुहब्बत का उत्साह था, जिसकी रोशनी उनके दिल पर पड़ चुकी थी। इस लिए चाहे किसी नबी के साथ मुकाबला कर लिया जाए आपकी शिक्षा, धैर्य, अपने अनुयायियों को दुनिया से दूर हटा देना, बहादुरी से सच्चाई के लिए ख़ून बहा देना,इस की तुलना कहीं न मिल सकेगी।" फरमाते हैं कि "यह स्थान आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा का है और उनमें जो आपसी प्रीति और मुहब्बत था उसका नक्शा (कुरआन शरीफ में) दो वाक्यों में उल्लेख किया है। وَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ لَوْ اَنْفَقْتَ مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مَّآ اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ (अल्-अंफाल : 64 )। अर्थात जो प्रेम उनमें है वह कभी पैदा न होता चाहे सोने का पहाड़ भी दिया जाता है। " आप फरमाते हैं कि "अब एक और जमाअत मसीह मौऊद की है जिसने अपने अन्दर सहाबा का रंग पैदा करना है। साहबा की तो वह पवित्र जमाअत था जिस की प्रशंसा में कुरआन शरीफ भरा पड़ा।" फरमाते हैं "क्या आप लोग ऐसे हैं?" जब ख़ुदा कहता है कि हज़रत मसीह के साथ वे लोग होंगे जो सहाबा के साथ कंधे से कंधा मिला कर चलेंगे। सहाबा तो वे थे जिन्होंने अपनी संपत्ति, अपना देश सच्चाई की राह पर क़ुरबान कर दिया। और सब कुछ छोड़ दिया हज़रत सिद्दीक़ अकबर रज़ि अल्लाह तआला अन्हो का मामला अक्सर सुना होगा। एक बार जब ख़ुदा की राह में माल देने का आदेश दिया गया था, तो घर की कुल संपत्ति ले आए जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा कि घर में क्या छोड़ आए तो फरमाया कि ख़ुदा और रसूल को घर छोड़ आया हूँ।"आप फरमाते हैं कि "रईस मक्का हो और कंबल पहने हुए"। (हज़रत अबू बकर का स्थान यह था कि मक्का का रईस। जब मुसलमान हो गए तो कंबल पहने हुए।)" ग़रीबों का लिबास पहने हुए। ये समझ लो कि वे लोग तो ख़ुदा के रास्ते में शहीद हो गए। उनके लिए तो यही लिखा है कि तलवारों के नीचे जन्नत है, लेकिन हमारे लिए तो इतनी कठिनाई नहीं है क्योंकि यज़उल हरब हमारे लिए आया है। अर्थात महदी के समय लड़ाई नहीं होगी।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पेज 42, 43 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

फिर सहाबा की जीवन शैली का वर्णन करते हुए फरमाते हैं कि

"देखो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा रिज़वानुल्लाह अलैहिम क्या आराम पसन्द और खाने पीने का चाहने वाले थे जो कुफ्फार पर विजयी हो गए?(केवल सुविधाएं चाहते थे इसलिए कुफ्फार पर विजयी हो गए।) फरमाया "नहीं। यह मामला नहीं है। पहली पुस्तकों में भी उनके बारे में आया है कि रातों को जागने वाले और दिन के समय रोज़ी रखने वाले होंगे। और उनका जीवन कैसे व्यतीत होता था? क़ुरआन शरीफ़ उनकी जीवन शैली का पूरा नक्शा खींचकर दिखाता है وَمِنْ رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُوْنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَعَدُوَّكُمْ (अल्फाल: 61)और يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا (आले इम्रान 201 )। और अपने घोड़ों को सीमा पर बांधे रखो और तुम्हारे दुश्मन इस तुम्हारी तैय्यारी से डरते रहें। हे मोमिनों धैर्य और तैय्यारी करो।" (धैर्य करते रहना, धैर्य दिखाओ और धीरज करो।) रिबात के अर्थ क्या हैं? आप फरमाते हैं कि "रिबात उन घोड़ों को कहते हैं जो दुश्मन की सीमा पर हैं बांधे जाते हैं अल्लाह तआला सहाबा को प्रतिद्वंद्वी के मुकाबला के लिए दृढ़ रहने का आदेश देता है। और इस रिबात शब्द से उन्हें पूरी और सच्ची तैयारी करने का आदेश देता है। उनके जिम्मे दो कार्य थे। एक स्पष्ट दुश्मनों का मुकाबला और दूसरा आध्यात्मिक मुकाबला" (आध्यात्मिक मुकाबला के लिए भी रिबात का आदेश दिया है। हर समय सच्ची तैयारी करते रहो।) फ़रमाया "और रिबात शब्दकोश में नफस और इंसान के दिल को भी कहते हैं। और यह एक सूक्ष्म बात है कि घोड़े वही काम करते हैं जो सिधाए हुए और शिक्षित हों"। आप फरमाते हैं कि "आजकल घोड़ों की शिक्षा और प्रशिक्षण का इसी तरीके ध्यान रखा जाता है। और इसी तरह उन्हें सिधाया और सिखाया जाता है जिस तरह बच्चों को स्कूलों में विशेष ध्यान और व्यवस्था से शिक्षा दी जाती है। अगर उन्हें शिक्षा न दी जाए और वह सिधाए न जाएं तो वह बिल्कुल निकम्मे हों। और बजाय उपयोगी होने के भयानक और ख़तरनाक साबित हों।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 54,55 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

अत: इसी तरह नफस को भी सुधारने की जरूरत है। इस को भी नियंत्रण करने की ज़रूरत है। इस को भी शिक्षा देने की ज़रूरत है। इसलिए रिबात तभी होगा जब व्यक्ति, एक मोमिन ज्ञानीय और व्यावहारिक रूप में तरक्की की कोशिश करे और अपने नफ्स को भी लगाम देता रहे।

सहाबा के कैसे नमूने थे जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र कुव्वत के कारण उन में पैदा हुए? इसके कुछ नमूने प्रस्तुत करता हूँ। एक तो हम ने हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहो अन्हो का नमूना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उद्धरण में देखा कि अपने घर का सारा सामान धार्मिक ज़रूरत के समय लेकर हाज़िर हो गए। आप के विनय और विनम्रता की एक और घटना सुनें।

एक बार हज़रत अबूबकर रज़ि अल्लाह की हज़रत उमर रज़ि अल्लाह के साथ तकरार हो गई जो नाराज़गी तक लंबी बहस हो गई। उनकी आवाज़ें उंची हो गईं होंगी इसके बाद जब बात समाप्त हो गई तो हज़रत अबूबकर रज़ि अल्लाह हज़रत उमर रज़ि अल्लाह के पास गए और क्षमा चाही की अधिक तकरीर में आवाज़ शायद कुछ ज्यादा ऊंची हो गई होगी। कड़े शब्द हो गए होंगे। लेकिन हज़रत उमर रज़ि अल्लाह ने माफ करने से मना कर दिया इस पर हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और यह घटना वर्णन की और अर्ज़ किया कि उसकी माफी के लिए मैं आपकी सेवा में हाज़िर हुआ हूँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला माफ फरमाए। कुछ ही समय बाद, हज़रत उमर रज़ि अल्लाह को लज्जा महसूस हुई। शर्मिंदगी हुई। एहसास हुआ कि ग़लती हो गई थी और वह भी हज़रत अबूबकर रज़ि अल्लाह के घर गए कि उनसे क्षमा करें। वहां देखा तो घर में नहीं थे। हज़रत उमर भी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए। इन्हें देखकर, आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का चेहरा नाराज़गी से लाल हो गया। यह देखकर कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हज़रत उमर रज़ि अल्लाह पर बड़ी नाराज़गी है। हज़रत अबु बकर रज़ि अल्लाह घुटनों के बल बैठ कर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से विनती करने लगे कि ग़लती मेरी थी आप उम्र को माफ कर दें। (सही अल-बुख़ारी हदीस 3661) यह थी आप की नम्रता और अल्लाह तआला का डर और फिर हज़रत उमर रज़ि अल्लाह भी शर्मिंदा थे और फिर माफी मांगने आए थे। दोनों तरफ से शर्मिन्दगी थी। यह वह पवित्र समाज था जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने स्थापित किया था और इसमें रहने वाले अल्लाह तआला की प्रसन्नता को पाने वाले बने।

हज़रत उमर रज़ि अल्लाह की विनम्रता की एक घटना का उल्लेख यूं मिलता है कि एक व्यक्ति ने हज़रत उमर रज़ि से फरमाया कि आप हज़रत अबूबकर रज़ि से अच्छे हैं। इस पर हज़रत उमर रज़ि अल्लाह रोने लगे और फरमाया कि ख़ुदा की कसम हज़रत अबू बकर की एक रात और एक दिन ही उमर और उसकी औलाद की पूरी ज़न्दिगी से बैहतर है। फरमाया किया तुम्हें इस रात और दिन का हाल

सुनाओं? पूछने वाले के यह कहने पर कि हां सुनाएं। आपने फ़रमाया कि उनकी रात तो वह थी जब रात नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हिजरत करके जाना पड़ा और हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहो अन्हो ने आपका साथ दिया और उन्हें दिन वह था जब सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वफात पा चुके और अरबों ने नमाज़ और ज़काता का इन्कार करने वाले हो गए। उस समय उन्होंने मेरे सुझाव के विपरीत जिहाद का इरादा किया और अल्लाह तआला ने उन्हें इस में सफल कर के साबित कर दिया कि वह सच्चाई पर थे।

(कनज़ुल उम्माल किताबुल फज़ाइल बाब फज़ाइल सहाबा जिल्द 12 पृष्ठ 493-494 हदीस 35615 मुद्रित मौउसस अर्रसिालत बैरूत 1985 ई)

फिर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक और महान सहाबी हज़रत उसमान थे जो तीसरे ख़लीफा भी थे। आपकी रिशतेदारों से उत्तम व्यवहार और आपके जीवन की कई विशेषताएं बहुत महत्वपूर्ण हैं। हज़रत आयशा फरमाती हैं कि हज़रत उसमान सबसे बढ़कर के रिश्तेदारों का ध्यान रखने वाले और सबसे बढ़कर अल्लाह तआला से डरने वाले थे। और धर्म के लिए भी कई कुरबानियां करने वाले थे

(अलअसाबा फी तमीज़ुस्सहाबा जिल्द 4 पृष्ठ 378 उस्मान बन अफ्फान मुद्रित दारुल कुतुब अलइलमिया बैरूत 2004 ई)

जब मस्जिदे नबवी के विस्तार का मामला आया तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि आसपास के जितने मकान हैं उन्हें मस्जिद में जोड़ लिया जाए। ज़ाहिर है वे घर लोगों से ख़रीदना था उस समय हज़रत उसमान ने आगे बढ़कर अर्थात तुरंत अपने आप को पेश किया कि मैं यह खरीदता हूं और पंद्रह हज़ार दिरहम देकर वह जगह ख़रीद ली। मुसलमानों को पानी की कठिनाई का सामना करना पड़ा। एक यहूदी की कुआं था वहाँ से पानी लेने में दिक्कत थी तो आप ने यहूदी से मुंह मांगी कीमत पर वह कुआं ख़रीद कर मुसलमानों के लिए पानी की व्यवस्था की।

(सुनन अन्नसिाई किताब अल-अहबास हदीस 3637-3638)

फिर हज़रत अली रज़ि अल्लाह तआला अन्हो हैं। अमीर मुआविया ने किसी से हज़रत अली के गुण वर्णन करने के लिए कहा। उस ने कहा आप सुन लेंगे जो मैं वर्णन करूंगा। उन्होंने कहा ठीक है मैं सुन लूंगा। ज़ाहिर है और हम जानते हैं कि उनका विरोध चल रहा था। उसने कहा कि अगर सुनना है तो सुनें कि वह उच्च मनोबल और मज़बूत शक्तिशाली मालिक थे। निर्णायक बात बोलते और न्याय से निर्णय करते उनकी तरफ से ज्ञान का स्रोत फूटता और उन की हिक्मत प्रत्येक तरफ टपकती। दुनिया और उसकी रौनकों से भय महसूस करते और रात और उसके तंहाई से प्रेम करते अर्थात बजाय दुनियादारी में शामिल होने के लिए रातों को इबादत करना उनकी पसंदीदा चीजें थीं। कहने लगे कि वह बहुत रोने वाले बहुत ध्यान से ग़ौर करने वाले। वह हम में हमारे जैसे ही रहते थे। बहुत सरल जीवन था कहता है कि ख़ुदा की कसम, हम उन के साथ मुहब्बत तथा निकटता के सम्बन्ध के इलावा उन के रौब के कारण बात करने से रुकते थे। खुल कर बात नहीं कर सकते थे। वह धार्मिक लोगों का सम्मान करते थे और यतीमों को अपने पास स्थान देते थे। ताकत वर को उस के झुठे धारणा पर अवसर न देते थे। अगर कोई झूठा है और उस ने झूठी बात धारण की है, उस में लालच है लालच से लाभ उठाना चाहता है तो इस का उस को अवसर न देते थे। वहीं पकड़ लेते थे। और कमज़ोर आप के इंसाफ से निराश न होता था। ये हज़रत अली रज़ि अल्लाह के गुण थे। यह सुन कर हज़रत अमीर माविया ने भी कहा कि तुम सच कहते हो और रो पड़े।

(अल्इसतियाब फी मअरफतिल सहाबा जिल्द 3 पृष्ठ 208-209 दारुल कुतुब इलमिया बैरूत 2002 ई )

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक सहाबी हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ थे। वित्तीय कुरबानी में आप का बहुत बड़ा स्थान था। बहुत धनवान व्यापारी थे। दौलत बहुत अधिक थी। एक बार एक आदमी ने ख़ाना काबा की परिक्रमा करते हुए किसी की आवाज सुनी जो यह दुआ कर रहा था कि हे अल्लाह मुझे अपने नफ्स के कंजूसी से सुरक्षित रख। जब देखा कि वह व्यक्ति कौन था, वह अब्दुल रहमान बिन औफ़ थे ।

(अल्इसतियाब फी मअरफतिल सहाबा जिल्द 2 पृष्ठ 388-389 दारुल कुतुब इलमिया बैरूत 2002 ई )

एक बार उनका एक व्यावसायिक काफिला मदीना आया तो इसमें सात सौ उंटों पर गेहूं आटा और दूसरा सामान लदा हुआ था। मदीना में इतने वड़े काफिला कि चर्चा हो रही थी कि इतना बड़ा कारवां आया। यह ख़बर हज़रत आयशा रज़ियल्लाहो अन्हा तक भी पहुंची तो हज़रत आयशा ने फरमाया कि मैं आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना है कि अब्दुर्रहमान जन्नती हैं। जब अब्दुर्रहमान को यह सूचना हुई तो हज़रत आयशा की ख़िदमत में हाज़िर हुए और फरमाया कि आप को गवाह करके सात सौ ऊंटों के इस लदे हुए काफिला को जो पूरे सामान से लदा हुआ है, ऊंटों सहित खुदा की राह में समर्पित करता हूँ।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 3, पृष्ठ 378 अब्दुर्रहमान बन औफ मुद्रित दारुल फिक्र बैरूत 2003 ई )

हज़रत अब्दुर्रहमान के स्थान का अनुमान इस बात से पता चलता है कि एक बार हज़रत खालिद बिन वलीद की हज़रत अब्दुर्रहमान से तकरार हुई तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि हे खालिद ! मेरे सहाबा को कुछ न कहो। तुम में से अगर कोई अहद पहाड़ के बराबर भी सोना खर्च करे तो अब्दुर रहमान बिन औफ की उस सुबह या शाम को भी नहीं पहुँच सकता जो उसने ख़ुदा तआला के रास्ते में जिहाद करके बिताई हैं।

(कनज़ुल उम्माल किताबुल फज़ाइल बाब फज़ाइल सहाबा जिल्द 13 पृष्ठ 222-223 हदीस 36674 मुद्रित मौउसस अर्रसिालत बैरूत 1985 ई)

एक सहाबी साद बिन वक़ास थे। इस्लाम को स्वीकार करने के बाद, उनके ईमान की घटना का वर्णन इस प्रकार होता है। वह ख़ुद फरमाते हैं कि जब मैंने इस्लाम स्वीकार किया, तो मेरी मां ने कहा, "यह तुम ने क्या नया धर्म धारण किया है? " तुम्हें बहरहाल इस धर्म को छोड़ना होगा अन्यथा मैं न खाऊंगा और न ही पीओंगी भूख हड़ताल है यहां तक कि मर जाओंगी और परिणाम क्या होगा? लोग तुम्हें कहेंगे कि मां का कत्ल कर दिया तुम्हें माँ के हत्यारे का ताना देंगे। फरमाते हैं कि मैंने कहा माँ ऐसा कभी न करना, क्योंकि मैं अपना धर्म नहीं छोड़ सकता लेकिन वह न मानी और तीन दिन और रातें गुज़र गईं उन्होंने न कुछ खाया न पिया। भूख से निढाल थीं। तब मैं उनके पास गया और कहा, "ख़ुदा की कमस !" अगर आपके पास हज़ारों जानें भी हों और यदि वे एक एक कर के निकलें तो भी मैं अपना धर्म नहीं छोड़ूँगा जब उसने बेटे के इस इरादा को देखा तो उसने खाना खाना शुरू कर दिया।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 2, पृष्ठ 234 अब्दुर्रहमान बन औफ मुद्रित दारुल फिक्र बैरूत 2003 ई )

अल्लाह तआला फरमाता है कि माता-पिता की बातें मानो। उन की सेवा करो लेकिन जहां धर्म का मामला आया, जबकि अल्लाह का मामला आए वहां बहरहाल तुम ने अल्लाह तआला की बात सुननी है। आपको आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा करने और ख़िदमत करने का अवसर भी मिला। हज़रत आयशा बयान फ़रमाती हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब मदीना आए तो कुछ दिनों में कुछ या उन दिनों में कुछ ख़राब हालात थे। इस वजह से आप रात आराम से सो नहीं सके। आपने फरमाया कि कई रातें इसी तरह से गुज़र गईं। एक रात आपने कहा "क्या ही बेहतर होता यदि रात ख़ुदा का कोई बन्दा पेहरा देता?" जोखिम जो थी वह न था और मैं थोड़ी देर आराम कर लूं, जब आप इसके बारे में बात कर रहे थे, अचानक आवाज़ हथियारों की आवाज़ सुनाई गई थी। फिर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा, "कौन है?" उत्तर दिया मैं साद हूँ आपने पूछा कैसे आना हुआ? उन्होंने फरमाया कि आपकी सुरक्षा के बारे में कोई ख़तरा पैदा हुआ है, यही कारण है कि मैं पेहरा देने के लिए आया हूं। आक: सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रात आराम से सोए और उन्हें दुआ दी।

(सही मुस्लिम हदीस 6231)

एक सहाबी हज़रत ज़ुबैर बिन अल-अवाम थे। उन में अल्लाह तआला का भय बहुत था। अर्थात अल्लाह तआला का डर बहुत था कि मैं कोई ग़लत बात न करूं जिससे अल्लाह तआला की पकड़ में आ जाओं। आपके बेटे ने एक बार पूछा कि आप अन्य सहाबा की तरह हदीस अत्यधिक वर्णन नहीं करते हैं। उन्होंने कहा, जब से मैं इस्लाम लाया हूं आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अलग नहीं हुआ। हमेशा आप के साथ रहा हूं लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस चेतावनी से डरता हूँ। (साथ-साथ रहा हूँ। बहुत बातें सुनी हैं। कई संदर्भ हैं मेरे पास। कई परंपराएं हैं लेकिन आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस चेतावनी से डरता हूँ।) कि जिसने मेरी तरफ ग़लत बात संबंधित की वह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले कि कहीं कोई ऐसी बात न हो जाए जिस को मैं समझा न हूं और ग़लत

बात निकल और इसलिए मैं बहुत डरता हूं ।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल इल्म हदीस 107)

बहादुरी और मर्दानगी भी आप में बहुत अधिक थी। ऐसा इसलिए था कि जब अलेक्जेंड्रिया की घेराबंदी लम्बी हो गई थी, तो आप ने सीढ़ी लगाकर किला की दीवार पर चढ़ना चाहा। साथियों ने कहा कि किले में बहुत अधिक प्लेग हुआ है। आपने फरमाया कि कोई बात नहीं। हम भी ताने और प्लेग के लिए हैं और आप ने बात नहीं मानी और किले की दीवार पर चढ़ गऐ। बहुत अमीर थे धन का अधिकांश भाग अल्लाह तआला के मार्ग में सदका देने के लिए इस्तेमाल करते थे।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3, पृष्ठ 57-58 मुद्रित दारुल इहया अत्तुरास अरबी बैरूत 1996 ई)

फिर एक सहाबी का उल्लेख मिलता है जिसका नाम तलहा बिन उबैदुल्लाह था। आप भी एक अमीर आदमी थे और अल्लाह तआला के रास्ते में खर्च करते थे। एक बार अपनी संपत्ति का एक हिस्सा सात लाख दिरहम में हज़रत उसमान को बेचा और सब माल अल्लाह तआला की राह में खर्च कर दिया।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3, पृष्ठ 117 मुद्रित दारुल इहया अत्तुरास अरबी बैरूत 1996 ई)

मेहमान नवाज़ी भी उन का एक विशेष गुण था। एक बार एक कबीला के तीन ग़रीब आदमियों ने इस्लाम स्वीकार किया तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा "सहाबा में से कौन इन की देखभाल की ज़िम्मदारी लेता है" हजरत तलहा ने ख़ुशी से इन की ज़िम्मेदारी ले ली। और तीनों को अपने घर ले गए और वहीं ठहराया और मेहमानी करते रहे यहां तक कि स्थायी घर का आदमी बना लिया कहते हैं कि यहां तक कि मौत ने उन्हें आप से जुदा किया।

( मुस्नद अहमद बिन हंबल जिल्द 1 पृष्ठ 446 हदीस 1401 मसनद तलहा बिन उबैदुल्लाह मुद्रित आलमुल कुतब बैरूत 1998 ई)

हज़रत तलहा दोस्ती और भाईचारे का रिश्ता भी खूब निभाने वाले थे।

हज़रत काब बिन मलिक अंसारी को जब गज़वह तबूक में शामिल न होने के कारण बातचीत न करने की सज़ा हुई तो जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला के हुक्म से उनकी माफी की घोषणा की और वह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मज्लिस में जब उपस्थित थे, तो हज़रत तलहा दीवानों की तरह दौड़ते हुए आगे बढ़े और हाथ मिलाया और उन्हें मुबारकबाद दी। हज़रत काअब हमेशा कहते थो कि हजरत तलहा जैसे और किसी ने स्वागत और गर्मजोशी नहीं दिखाई ।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी हदीस 4418)

एक ख़ूबी जो पत्नियों से संबंध रखती है, पतियों से संबंध रखती है वह भी आप की एक पत्नी बयान करती हैं कि हज़रत तलहा हंसते मुस्कुराते घर वापस आते। बहुत काममें व्यस्त रहने वाले थे। व्यस्त थे। सब कुछ था जब वे घर आते तो इस प्रकार की शक्ल बना कर नहीं आते थे कि घर वाले डर कर एक ओर कोने में लग जाएं हंसते मुस्कराते घर वापस आते और हंसमुख बाहर जाते हैं। परिवार वालों के साथ हमेशा अच्छा व्यवहार करते थे। हमेशा ख़ुश रहते थे और यह नहीं कि घर में अन्य स्वभाव है और बाहर अन्य है। कहती हैं कि कुछ मांगो तो दे देते थे कभी कंजूसी नहीं करते थे मांगो तो दे देते थे और ख़ामोश रहो तो मांगने के इंतज़ार नहीं करते थे अर्थात यह नहीं कि मांगो तभी मिलना है बल्कि जो ज़ुरूरतें होती थीं ख़ुद देखते भी रहते थे और कोशिश करते थे कि मैं किसी प्रकार घर वालों की ज़रूरतें पूरी करूं। चार बीवियां थीं। चारों बड़ी ख़ुश थीं। कहती हैं कि नेकी करो तो शुक्र करने वाले होते थे। और ग़लती करो तो माफ कर देते थे।

यह दो नियम हैं जो घरों की शान्ति का कारण बनते हैं जो पति पत्नि के रिश्तों को मज़बूत करते हैं अत: यह भी हमारे लिए एक नमूना है।

(कनज़ुल अम्माल जिल्द 12 पृष्ठ 198-199 हदीस 36592)

एक सहाबी उबैदुल्लाह बिन मसऊद की ख़िलाफत की आज्ञाकारिता की घटना यूं बयान हुआ है। आप को हज़रत अमर ने कौफा वालों की तालीम तथा तरबियत के लिए निर्धारित किया और कौफा वालों को लिखा कि इन की मदीना में बहुत ज़रूरत है परन्तु तुम्हारे लिए कुरबानी कर के मैं इन को तुम्हारे लिए भेज रहा हूं।

(अत्तबकात कुबरा लेइबने साद जिल्द 3, पृष्ठ 135-136 बेरूत 1996)

तो यह स्थान था उनका। हज़रत उसमान ने भी उन के इस स्थान को स्थापित रखा। बल्कि कौफा का अमीर निर्धारित किया और कज़ा और बैयतुल-माल की प्रणाली भी इन के पास थी तो समस्याऐं पैदा हुईं। क़ौफा वालों की शरारतें भी होती रहती थीं। तो फिर कुछ कारणों से, हज़रत उसमान ने उन को अमारत से हटा दिया वापस मदीना बुला लिया।

तो कोफा वालों ने कहा कि आप वापस न जाओ और यहां रहो। आपकी ज़िम्मेदारी हमारी है कि आप को कोई नुकसान न पहुंचाए। इस पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद ने फरमाया कि समय के ख़लीफा का पालन मुझ पर वाजिब है और कभी सहन नहीं कर सकता कि उनकी अवज्ञा करके नाफ़रमानी कर के फित्ना का कोई दरवाजा खोलूँ और मदीना वापस चले गए। उनमें से एक, वर्णन करने वाले ने कहा, "मैं कई सहाबा की मज्लिस में बैठा हूं, लेकिन अब्दुल्ला बिन मसूद की दुनिया से दिल न लगाना और आख़रत से दिल लगाने की अलग शान थी।"

(अलअसाबा फी तमीज़ुस्सहाबा जिल्द 4 पृष्ठ 201 उस्मान बन अफ्फान मुद्रित दारुल कुतुब अलइलमिया बैरूत 2004 ई)

ज़ाहिरी तौर पर भी आप बड़े सफाई पसंद थे। दुनिया से दिल न लगाने के बावजूद, आपके नौकर थे, आप के एक नौकर ने कहा कि सर्वश्रेष्ठ किस्म का सफेद कपड़ा पहनते और अच्छा इत्र लगाते। उनके बारे में हज़रत तलहा कहते हैं कि उनकी खुशबू ऐसी उच्च प्रकार की होती थी कि रात के अंधेरे में भी इत्र से पता चल जाता था कि अब्दुल्ला बिन मसूद आ रहे हैं।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3, पृष्ठ 93-84 मुद्रित दारुल इहया अत्तुरास अरबी बैरूत 1996 ई)

अत: सांसारिक चीज़ों का उपयोग भी था लेकिन दुनिया की चाहत नहीं थी।

फिर, हज़रत बिलाल जो हर प्रकार के दर्द का सामना करते थे, लेकिन वह हमेशा अकेले ख़ुदा का नारा लगाया करते थे। आपको कठोर चट्टानों और गर्म रेत पर घसीटा जाता, लेकिन इस के बावजूद अपने ईमान पर दृढ़ रहे और अहद अहद ही कहा। ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह ही कहा।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3, पृष्ठ 124 मुद्रित दारुल इहया अत्तुरास अरबी बैरूत 1996 ई)

फिर साद बिन मुआज़ जो अंसारी थे उन्होंने जंगे बद्र वाले दिन अंसार का प्रतिनिधित्व करते हुए आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अंसार की तरफ से जो आशा थी उस पर आप पूरा उतरे और निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल हम आप पर ईमान लाए और पुष्टि करते हैं कि आप की शिक्षा सही है, और हमने आपके साथ एक मज़बूत वादा किया कि हम हमेशा आप की बात सुनकर शीघ्र इताअत करेंगे। अत: है अल्लाह के रसूल! आप का जो इरादा है उसके अनुसार आगे बढ़ें इन्शा अल्लाह आप हमें अपने साथ पाएंगे। यदि आप हमें समुद्र में कूदने के लिए हिदायत करते हैं, तो हम इसमें कूदेंगे और हम में से कोई भी पीछे नहीं रहेगा और हम दुश्मन से मुकाबला करने में घबराते नहीं। और हम डट कर मुकाबला करना ख़ूब जानते हैं। हमें पूरी आशा हैं कि अल्लाह तआला आप को हम से वे सब कुछ दिखाऐ जिस से आप की आंखें ठण्डी होंगी। अत: आप जहां चाहें हमें ले जाएं।

(सीरत इब्ने हश्शाम पृष्ठ 421 बाब गज़वह बद्र बैरूत 2001 ई)

अत: ये लोग थे जिन्होंने अपने वादे पूरे किए और फिर अपने नमूने बनाए और अल्लाह तआला भी उनसे राज़ी हुआ। ये कुछ सहाबा के नमूने हैं। तारीख़ तो उन के नमूनों से भरी पड़ी है। ये लोग हैं जो हमारे लिए अनुकरण योग्य हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं। कि

"कुरआन को छोड़कर, सफलता एक असंभव और कठिन बात है। और ऐसी सफलता एक काल्पनिक बात है, जिस की तलाश में ये लोग लगे हुए हैं। सहाबा के नमूनों को अपने सामने रखो। देखो, जब उन्होंने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनुसरण किया और धर्म को दुनिया पर प्राथमकिता दी, तो वे सब वादे जो अल्लाह तआला ने उन से किए पूरे हो गए। शुरू में विरोद्धी हँसते थे कि स्वतंत्रता से बाहर निकल नहीं सकते। और राज्य का दावा करते हैं। लेकिन रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आज्ञाकारिता में खो कर वह पाया जो सदियों से उनके हिस्से में न आया था। वे कुरआन करीम और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्रेम करते और उन्हीं की इताअत और पालन में दिन रात प्रयासरत थे। उन लोगों का अनुकरण किसी रस्म तथा रिवाज तक सीमित न था जिन को कुफ्फार कहते थे" " (अर्थात जब ईमान ले आए तो काफिरों के हर काम जो थे छोड़ दिए। और विशेष रूप से इस्लामी शिक्षा का पालन करना शुरू कर दिया।) " जब तक इस्लाम इस हालत में रहा वह समय इकबाल और वृद्धि का रहा।"

(मल्फूज़ात जिल्द 2 पृष्ठ 157 प्रकाशन 1985 यू. के)

जब ऐसा समय था तो इस्लाम तरक्की भी कर रहा था।

फिर एक मौका पर आप सहाबा की फ़ज़ीलतें बयान करते हुए फरमाते हैं कि:

"सहाबा रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ऐसे वफादार और विनम्र थे कि किसी नबी के शागिर्दों में ऐसी मिसाल नहीं मिलती और ख़ुदा की आज्ञाओं पर ऐसे स्थापित थे कि कुरआन शरीफ उनकी तारीफों से भरा पड़ा है। लिखा है कि जब शराब निषेध का आदेश नाज़िल हुआ तो जितनी शराब बर्तनों में थी वह गिरा दी गई और फरमाते हैं इस कदर शराब बही कि नालियां बह निकलीं। और फिर कभी ऐसा बुरा काम नहीं हुआ।" (जब एक बार शराब से तौबा कर ली तो कभी न पी।) "और वह शराब के पक्के दुश्मन हो गए। देखो यह कैसी दृढ़ता और दृढ़ता पर मज़बूती थी। रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पालन जिस वफादारी, प्रेम और इरादत और जोश से उन्होंने की कभी किसी ने नहीं की। मूसा अलैहिस्सलाम की जमाअत के हालात पढ़ कर मालूम होता है कि वह कई बार पत्थर मारना चाहती थी। और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के हवारी तो ऐसे कमज़ोर और आस्था के कमज़ोर निकले के ख़ुद ईसाइयों को भी स्वीकार करना पड़ा है। और हज़रत मसीह, आप इंजील में उन्हें आस्था में सुस्त का नाम रखते हैं उन्होंने अपने शिक्षक की साथ ग़द्दारी की। और बेवफाई का उदाहरण दिखाया। कि इस मुसीबत की घड़ी में अलग हो गए। एक ने गिरफ्तार करा दिया दूसरे ने लअनत भेज कर इंकार कर दिया। परन्तु सहाबा ऐसे आस्था रखने वाले और जान कुरबान करने वाले थे कि ख़ुद ख़ुदा तआला ने उन की गवाही दी उन्होंने ख़ुदा तआला की राह में जानों तक को कुरबान करने के लिए कदम पीछे न हटाया। और ईमान का प्रत्येक गुण उन में पाया जाता था। इबादत करने वाले, दान करने वाले, बहादुर और वफादार ये ईमान की शर्तें किसी दूसरी कौम में नहीं पाई जातीं।"

आप फरमाते हैं कि

" जिस कदर दु:ख और पीड़ा सहाबा को इस्लाम के प्रारंभ में उठानी पड़ी उनकी मिसाल भी किसी और देश में नहीं मिलती। उस बहादुर क़ौम ने उन मुसीबतों को सहन करना बर्दाशत कर लिया लेकिन इस्लाम को नहीं छोड़ा। इन मुसीबतों का अंत आख़िर इस पर हुआ था कि उन्हें देश छोड़ना पड़ा और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ हिजरत करनी पड़ी और जब ख़ुदा तआला की नज़र में सज़ा के योग्य ठहरी तो ख़ुदा तआला ने उन्हीं सहाबा को मामूर किया कि इस उद्दण्ड कौम को सज़ा दीं। अत: इस क़ौम को जो दिन रात मस्जिदों में अपने ख़ुदा की इबादत करती थी और जिस की संख्या बहुत ही थोड़ी थी जिस के पास कोई जंग का सामान भी न था विरोधियों के हमलों को रोकने के लिए मेदान जंग में आना पड़ा। इस्लामी जंगें प्रतिरक्षा की जंगें थीं।

(मल्फूज़ात जिल्द 4 पृष्ठ 137-138 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

फिर एक जगह आप ने सार रूप में फरमाया कि

"आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और सहाबा रज़ियल्लाहो अन्हुम के समय को अगर देखा जाए तो पता चलता है कि वे लोग बड़े सीधे लोग थे जैसे कि एक बर्तन कलई कराकर स्वच्छ और साफ हो जाता है ऐसे ही उन के दिल थे जो कलामे इलाही के नूर से प्रकाशित नफसानी मैल के ज़ंग से बिल्कुल साफ थे मानो قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰهَا (अशशमस 10 :) के सच्चे मिसदाक़ थे।"

(मल्फूज़ात जिल्द 6 पेज 15 प्रकाशन 1985 मुद्रित यू. के)

आप फरमाते हैं कि

"अगर इंसान इसी तरह साफ हो और अपने आप को कलई वाले बर्तन की तरह प्रकाशित कर ले तो ख़ुदा तआला के इनामों का खाना उस के दिल में डाल दिया जाए। लेकिन अब कितने इंसान ऐसे हैं जो इस तरह के हैं और ......कि प्रतिरूप हैं।"

(मल्फूज़ात भाग 6, जिल्द 15 हाशिया के साथ। 1985 संस्करण यू. के)

अत: हमें यह कोशिश करनी चाहिए कि हम अपना सुधार करें और अपने बर्तनों को साफ करें। और जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को स्वीकार किया है आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक़ को इस युग में स्वीकार किया है तो फिर इन सारी बातों पर अनुकरण करने की भी कोशिश करें जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ब्यान फरमाई हैं। जिन की पहली सुन्नत को आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने स्थापित फरमाई फिर इसके नमूने हमें आप के सहाबा ने दिखाए। तभी हम वास्तविक मुसलमान भी बन सकते हैं अल्लाह तआला हमें इस की तौफीक प्रदान करें।

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे प्रेमी की इत्तेबा में दुनिया को पहुंचाने वाले हों और दुनिया को यह एहसास दिलाने वाले हों कि जीवित परमेश्वर है, मौजूद है, अभी भी सुनता है, निशान भी दिखाता है, उसकी तरफ लौटो। उसके पास आओ और हम ख़ुद भी जीवित ख़ुदा से संबंध बनाने वाले हों और शिक्षा का पालन करने वाले हों। उसकी इबादत का हक अदा करने वाले हों उस के गुणों को सही रंग में जानने वाले हों। उस के पुरस्कारों के वारिस हों। हमारी नस्लें भी और हम भी हमेशा अल्लाह के शिर्क (बहुदेववाद) से सुरक्षित रहें।

* आज के सत्र की दूसरी तक़रीर आदरणीय मौलाना मुहम्मद इनाम ग़ौरी साहिब नाज़िर आला कादियान ने "सीरत आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम-दावत इल्लाह के प्रकाश में" के विषय पर की। आप ने सूरह: अल-अहज़ाब के आयत 46 और 47 और सूरह: अलमाइदा की आयत 68 की तिलावत की और अनुवाद किया।

अपनी तक़रीर की शुरुआत में आप ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बेअसत से पहले के ज़माने बारे में बताया कि वह समय बहुत ज़लालत और गुमराही और शिर्क से ग्रस्त समय था। उस अंधेरे युग में एक करुणामय दिल था जो अपनी क़ौम की बुराइयों और गुमराहियों को देखकर बेचैन था, एक रूह थी जो आसमानी प्रकाश के लिए तड़पती थी, एक पच्चीस तीस वर्षीय किशोर था जिसने इस पीड़ा से पीड़ित होकर शान्ति की खोज में मक्का से तीन मील जबलुल हिरा की तलहटी में एक गुफ़ा को अपने रब्ब से राज़ तथा नियाज़ के लिए ठिकाना बना रखा था और लगातार पंद्रह साल तक कई कई दिन वहाँ कियाम करके तंहाई में रात दिन दुआएं करता रहा। यह थे हमारे आक़ा व मौला, मानवता के मोहसिन, रहमतुल लिल्आलमीन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम। अंतत: अल्लाह तआला ने आप की दुआएँ स्वीकार कीं और हज़रत जिब्राईल अमीन को अपने ईमान वर्धक कलामे पाक के साथ आपके पास भेजा। आपके सच्चे आशिक़ हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने एक शेर में फरमाते हैं

नूर लाए आसमाँ से ख़ुद भी वह इक नूर थे
क़ौमे वहशी में अगर पैदा हुए क्या जाए आर

इस आसमानी नूर से ज़ुल्मत कदों को मुनव्वर और ज़लालत के गढ़ों में पड़ी हुई मानवता को उठाकर प्रकाश के मीनार पर चढ़ाने के लिए आप को आदेश हुआ بَلِّغْ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَیْكَ हे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! अब कुरआन की हर नाज़िल होने वाली आयत लोगों को सुनानी है लिखवानी है याद करवानी है और फिर प्रत्येक कुरआन के आदेश का पालन करना है। وَاِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهٗ यदि आप यह पवित्र कर्तव्य अदा न कर सके तो मानो रिसलत का हक अद न किया।

आप न सय्यदना व मौलाना हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के तबलीग़ तथा दावत की कई ईमान वर्धक घटनाओं का वर्णन किया। उनमें से ताइफ़ के सफर की घटना नीचे दर्ज की जाती है। आप ने कहा कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दावत इलल्लाह के उल्लेख में ताइफ़ की यात्रा की घटना तो अविस्मरणीय है। मक्का से चालीस मील ताइफ़ बस्ती में अपने एक आज़ाद किए हुए ग़ुलाम ज़ैद के साथ गए, जहां अन्य सरदारों के अलावा कबीला सकीफा के तीन सरदार भी थे, जिन से अल्लाह तआला के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नानी की तरफ से रिश्ता भी था। हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें इस्लाम की दावत दी और मक्का के क़ुरैशों के विरोद्ध का वर्णन कर के सहायता की मदद की। यह सुन कर उन में से एक सरदार कहने लगा अगर तुझे ख़ुदा ने रसूल बना कर भेजा है तो वह काबा का पर्दा फाड़ रहा है "दूसरा बोला " क्या तुम्हारे पास अल्लाह तआला और कोई रसूल नहीं मिला था जिसे वह भेजता। तीसरे ने कहा," ख़ुदा की कसम! मैं तो तुम से बात करने के लिए भी तैय्यार नहीं हूं। (इब्ने हिशाम) और कहा कि इस बस्ती से तुरंत निकल जाओ और केवल उसी पर बस नहीं बल्कि कुछ ग़ुलामों और आवारा लड़कों को आप के पीछे लगा दिया जो गालियां देने और आवाज़ कसने लगे इतने में एक बड़ी भीड़ एकत्रित हो गई जो आप के रास्ते में दोनों तरफ खड़े होकर पत्थर बरसाने लगी। हज़रत ज़ैद, रसूलुल्लहा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आगे ढाल बनकर पत्थरों से आपको बचाने की कोशिश करते लेकिन वह अकेला कैसे बचा सकते थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पिंडलियां लहूलुहान और जूते ख़ून से भर गए और हज़रत ज़ैद को भी बहुत ज़ख्म आए। ये भीड़ वापस लौट आया तब आप ने उतबा और शैबा मक्का के सरदारों के अंगूरों के बाग़ में पनाह ली।

अत: ताइफ का दिन हमारे आक़ा व मौला हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर बहुत सख़्त दिन था। हज़रत आइशा ने एक बार नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा उहद के दिन से कठोर दिन भी कभी आप पर आया है?(उहद के दिन आप के मुबारक दांत शहीद हो गए थे और चेहरे पर भी ज़ख्म आए थे।) आप ने फरमाया हे आयशा! मैंने तुम्हारी क़ौम से बहुत तकलीफें उठाईं परन्तु सब से अधिक

पृष्ठ 16 पर शेष

# ख़ुत्बः जुमअः

**आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कुछ सहाबा रिज़्वानुल्लाह अलैहिम की ज़िन्दगियों और उनकी ईमानदारी और फिदाईत, इबादत में शौक, अल्लाह की राह में कुर्बानियों और उत्तम अखलाक़ का बहुत विश्वास अफ़रोज़ वर्णन और इस संदर्भ से उनके पवित्र नमूनों को अपनाने के लिए जमाअत के लोगों को महत्त्वपूर्ण नसीहतें।**

**आदरणीया अरीशा डीफन थालर साहिबा पत्नी आदरणीय फहीम डीफन थालर साहिब हॉलैंड की बेनिन में वफ़ात। अदरणीया वहां अनाथों के लिए स्थापित अनाथालय दारुल इकराम की इन्चार्ज थीं।**

**मरहूमा की श्रद्धा और उत्तम गुणों का वर्णन और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब**

**ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 22 दिसम्बर 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.**

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ. أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ. اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ إِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ.

पिछले ख़ुत्बा मैंने सहाबा रिजवानुल्लाह अलैहिम शान, उनके गुण और उनके नमूने के बारे में कुछ सहाबा के जीवन के हालात बयान किए थे। और भी अधिक व्याख्या करना चाहता था, लेकिन समय की वजह से व्याख्या नहीं कर सका। बाद में लोगों के ख़तों से मुझे एहसास हुआ कि कम से कम जो नोटिस मैं लिए थे वे वर्णन कर दूं ताकि जहां सहाबा की स्थिति का ज्ञान हो, उनके बलिदान का ज्ञान हो, वहाँ हमें उनके नमूनों को अपनाने की तरफ भी ध्यान पैदा हो। अत: आज मैं फिर इसी बारे में बात करूंगा।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक जलील क़द्र सहाबी अबू उबैदह बिन जराह थे। एक सहाबी के रूप में, निश्चित रूप से उनका एक स्थान था। कई विशेषताएं थीं लेकिन उन के अमीन होने के बारे में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो प्रमाणपत्र दिया है उसकी रिवायत यूँ मिलती है कि नजरान के प्रतिनिधिमंडल ने जब नजरान वालों से किसी को ख़िराज प्राप्त करने के लिए भेजने के लिए कहा तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मैं तुम्हारे पास ज़रूर ऐसा व्यक्ति भेजूंगा अर्थात एक ऐसा अमीन जो निश्चित रूप से अमीन होगा। उस समय आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा फिर गर्दन उठा उठाकर देखने लगे कि वह कौन व्यक्ति है जिसे आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह सम्मान दे रहे हैं, तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अबू उबैदह खड़े हो जाएं और हज़रत अबू उबैदह को वहां भेजने का अपदेश फरमाया।

(सही अल्बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी हदीस 4380)

उनके बारे में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक इरशाद की हज़रत अनस रज़ियल्लाहो अन्हो से ऐसी रिवायत मिलती है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि प्रत्येक उम्मत का एक अमीन होता है और हे मेरी उम्मत हमारे अमीन उबैदह बिन अल-जराह हैं

(सही अल्बुख़ारी किताबुल मनाकिब हदीस 3744)

कितना महान सम्मान है जिस से आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आपको सम्मानित किया। फिर उहद की जंग में उल्लिखित घटनाओं में से एक ऐसी घटना है जिसने आपको एक महान सम्मान प्रदान किया।

उहद की जंग में पहले मुसलमानों की जीत हो गई। फिर एक स्थान छोड़ने के कारण काफिरों ने दोबारा हमला कर दिया, और जब इस्लाम के शत्रुओं की तरफ से बहुत तीव्रता से पत्थर फेंके जा रहे थे जब युद्ध का पासा पलटा तब उन्होंने पत्थर भी फेंके। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ भी पत्थर फेंके तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बड़ी शिद्दत से कुछ पत्थर लगे और आप के ख़ूद की दो कड़ियां जो चेहरे पर पहना हुआ था। लौहे की वे कड़ियां थीं जो टूटकर आप के मुबारक गाल में धंस गईं तो हज़रत अबू उबैदह रज़ि अल्लाह जिन्होंने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गाल से ये कड़ियाँ निकालीं। अबू बक्र रज़ि अल्लाह वर्णन करते हैं कि पहले एक कड़ी को उन्होंने अपने दांतों से पकड़ा और उसे ज़ोर से खींचा तो वह बाहर निकल आई थी। लेकिन इतना ज़ोर लगाना पड़ा कि जब वह कड़ी बाहर निकली तो झटके से अबू उबैदा पीछे गिरे और इसके साथ ही आप का अगला एक दांत भी टूट गया। फिर उन्होंने दूसरी कड़ी को भी उसी तरह से खींचा, तो आप का दूसरा दांत भी टूट गया और फिर आप पीछे गिर गए। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुबारक चेहरे पर, वह इतनी गहराई से धंसी हुई थी। तो यह है वह प्रेम और फिदाईत की घटना जो रहती दुनिया तक अबू उबैदह रज़ि अल्लाह के ज़िक्र में जीवित रहेगी। उस समय लोग कहा करते थे और यह रिवायत में आता है कि अगले दो टूटे दांत वाला इतना सुंदर व्यक्ति हम ने कभी नहीं देखा जितने हज़रत अबू उबैदह रज़ि अल्लाह थे।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद जिल्द 3 पृष्ठ 218 मुद्रित दारुल अहयाअ अत्तुरास अल्अरबी बैरूत 1996 ई)

आम तौर पर, दांत के टूटने से शक्ल में थोड़ी थोड़ा भिन्न होता है, लेकिन उनका कहना है कि उनके दाँत टूटने के बावजूद उनकी सुंदरता बढ़ गई थी।

उनकी विनम्रता आपस के सहयोग और हिक्मत से मामला तय करने की घटना यूं बयान होती है कि एक अभियान पर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अम्र बिन अल-आस को सेनापति बनाकर भेजा। पता चला कि दुश्मनों की संख्या अधिक थी उनमें से अधिकांश ज्यादातर केवल गांव के देहाती थी और मुहाजरीन और बड़े सहाबा कम थे। इस पर हज़रत अम्र बिन अल- आस ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अधिक मदद मांगी तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू उबैदह रज़ि अल्लाह की निगरानी में एक दल भेजा और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अबू उबैदह रज़ि अल्लाह को यह नसीहत फ़रमाई कि दोनों अमीर परस्पर सहयोग से काम करें लेकिन अम्र बिन आस ने सोचा कि जो नई सेना पहुंची थी यह सेना तो मदद के लिए आई है इसलिए उनके अधीन है। अबू उबैदह रज़ि अल्लाह के सैनिकों को सीधा उन्होंने निर्देश देना शुरू कर दिया और हज़रत अबू उबैदह के अधीन जो बुज़ुर्ग सहाबा थे उनके कहने के बावजूद कि अबू उबैदह रज़ि अल्लाह को आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अमीर बनाकर और स्वतंत्र रूप से सेना का प्रधान बनाकर भेजा है। और फरमाया था कि एक दूसरे से सहयोग कर के कार्रवाई करना कि अम्र बिन आस भी लश्कर के सरदार हैं। ये अपनी सेना के सरदार हैं लेकिन एक दूसरे के साथ सहयोग करना। लेकिन अम्र बिन आस ने कहा कि अमीर तो मैं ही हूँ क्योंकि पहले मुझे भेजा गया है। इस अवसर पर बजाय किसी बहस में पड़ने के हज़रत अबू उबैदह रज़ि अल्लाह ने कहा कि यद्यपि कि मुझे आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक स्वतंत्र अमीर के रूप में भेजा है, लेकिन साथ ही सहयोग का भी फरमाया था इसलिए मेरी तरफ़ से आप को सहयोग ही मिलेगा चाहे आप मेरी बात मानें या न मानें मैं हर बात में अपनी बात मानूंगा।

(अल- असाबा फी तमीज़िज़्सहाबा जिल्द 3, सफ़ा 477 मुद्रित दारुल कुतुब अल-इलमिया बैरूत 2005 ई)

अत: है मौके की नज़ाकत के अनुसार सही निर्णय करके मुसलमानों की शक्ति को मज़बूत करने के लिए अपने अधिकारों को भी छोड़ देना। यह सहयोग आपसी है जिस की आज मुसलमानों को जरूरत है जो आज मुसलमानों की शक्ति को एक महान शक्ति बना सकता है। काश कि मुसलमान नेताओं को भी इतनी बुद्धि आ जाए कि इस तरह आपस में सहयोग करें।

और हुकूमत को न्याय से चलाने और दुश्मन को अपना चाहने वाला बना लेने के भी उदाहरण हज़रत अबू उबैदह रज़ि अल्लाह की हस्ती में ही मिलते हैं। जब रोम के राजा ने देश भर से सेनाएं जमा करके मुसलमानों के मुकाबला के लिए भेजीं तो उस समय मुसलमानों के लश्कर के सरदार अबू उबैदह रज़ि अल्लाह थे। मुसलमानों को पहले जीत हुई थीं। मुसलमानों ने कब्ज़ा कर लिया फिर एक बड़ी सेना को रोम के सम्राट ने भेजा था। ईसाइयों के कई इलाकों में, मुसलमानों द्वारा शहरों पर कब्ज़ा कर लिया गया था। हज़रत अबू उबैदह रज़ि अल्लाह ने जनरलों से सलाह के बाद तो यह रणनीति अपनाई कि वर्तमान में कुछ शहर हमें छोड़ देने चाहिए। जो क्षेत्र मुसलमान जीत चुके हैं उसे छोड़ दिया जाए लेकिन यह जीत के बाद क्योंकि वहाँ के ग़ैर मुस्लिम निवासियों से जज़िया और ख़िराज प्राप्त कर चुके थे तो उसे आप ने यह कहकर उन सभी लोगों को वापस कर दिया कि वर्तमान में हम तुम्हारी रक्षा नहीं कर सकते हैं तुम्हारे अधिकार अदा नहीं कर सकते इसलिए यह राशि जो हम ने आप जज़िया और ख़िराज के रूप में ली है उसे हम वापस करते हैं। अत: जीते हुए क्षेत्रों के लोगों की रकम जो लाखों में थी वापस कर दी। इस न्याय और अमानत के अदा करने का ग़ैर मुसलमानों पर इतना असर हुआ कि स्थानीय ईसाई निवासी मुसलमानों को विदा करते हुए रोते थे और दिल से यह दुआ कर रहे थे कि ख़ुदा तआला तुम्हें फिर जल्द वापस लाए।

(सैरुस्सहाबा जिल्द द्वितीय पृष्ठ 129 सीरत अबू उबैदा बन अलजराह मुद्रित दारुल इशाअत कराची 2004 ई) (फतूहुल बुलदान (बलाज़री) पृष्ठ 83,87 दारुल कुतुब अल-इल्मिया बैरूत 2000 ई)

यह थे वे लोग जिन्होंने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सोहबत में रह कर इंसाफ वे मानक स्थापित किए जिनकी कल्पना न पहले कोई कर सकता था और न अब कर सकता है। आज विश्व शांति की गारंटी यह न्याय और इंसाफ और अमानत का हक़ अदा करने से ही हो सकती है न कि बड़ी सरकारों के छोटी सरकारों को मजबूर करना कि हमारी इच्छा के अनुसार चलो अन्यथा हम तुम्हारे ख़िलाफ कार्रवाई करेंगे। और न ही यह है कि जो अक्सर मुसलमान देशों में हो रहा है कि जनता से टैक्स वसूल करके फिर उन पर खर्च करने की बजाय अक्सर नेता अपने ख़ज़ाने भर रहे हैं और नारा रसूल से मुहब्बत का और सहाबा की मुहब्बत का लगाते हैं।

फिर हज़रत अब्बास रज़ि अल्लाह जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चाचा थे। यह दान करने और रिश्तेदारों का ध्यान रखने में प्रसिद्ध थे। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अब्बास क़ुरैश में सबसे अधिक उदार और रिश्तेदारों का ध्यान रखने वाले हैं। यह सुनकर, हज़रत अब्बास ने सत्तर ग़ुलाम आज़ाद कर दिए।

(असदुल ग़ाबा जिल्द 3 पृष्ठ 62 अब्बास बिन अब्दुल मुतलिब मुद्रित दारुल फिक्र बैरूत 2003 ई)

ये थे उन लोगों की उदारता की गुणवत्ता।

फिर हज़रत जाफर हैं जो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चचेरे भाई हैं। हज़रत अली के सगे भाई थे उन्होंने आरम्भिक दिनों में इस्लाम स्वीकार करने की सआदत पाई और मक्का में हालात की वजह से हब्शा चले गए। मक्का वालों को जब ज्ञान हुआ तो उन्होंने अपने दो सरदारों को कई तोहफे देकर हब्शा भेजा और वहां के अधिकारियों आदि के लिए इस संदेश के साथ उपहार भेजे कि हमारे कुछ नासमझ युवा अपना धर्म छोड़ कर यहां तुम्हारे देश में आ गए हैं और तुम्हारा धर्म भी उन्होंने स्वीकार नहीं किया था। बिल्कुल नया धर्म है और इस माध्यम से उन्होंने सरदारों के माध्यम से, बड़े लोगों को उन्हें तौहफे देकर यह सिफारिश करवाना चाहिए कि शाह हब्शा से हमारी मुलाक़ात करवा दो और इसी तरह राजा के लिए भी कई तोहफे लेकर गए । वहाँ मिले भी उन्होंने राजा को उपहार भी दिए। बहरहाल नजाशी जो हब्शा का राजा था उनके काफिरों की या मक्का के प्रतिनिधियों बात सुनने के बाद मुसलमानों को अपने दरबार में बुलाया। मुसलमान बड़ी परेशानी की स्थिति में गए कि पता नहीं हम से क्या व्यवहार होता है। नजाशी ने उनसे पूछा कि क्या कारण है कि तुम ने अपना धर्म छोड़ दिया है। न ही तुम ने किसी पहली उम्मत का धर्म धारण है और न हमारा यानी ईसाई। हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहो अन्हो ने इस अवसर पर मुसलमानों का प्रतिनिधित्व किया और कहा कि हे राजा हम अज्ञानी लोग थे। बुतों की इबादत करते थे। मुर्दा खाते थे। दुर्व्यवहार करना और रिश्तेदारों से अपमानजनक व्यवहार करना हमारा काम था। हम में से ताक़तवर कमज़ोरों को दबा लेते थे। इन स्थितियों में अल्लाह तआला ने हम में एक रसूल भेजा जिस की शालीनता और ईमानदारी व अमानत और पाकदामनी और परिवार वंश से हम खूब परिचित थे। उसने हमें ख़ुदा तआला के एकेश्वरवाद और इबादत की तरफ बुलाया और यह शिक्षा दी कि हम ख़ुदा तआला के साथ किसी को साझी न ठहराएं। न बुतों की पूजा करें। उसने हमें ईमानदारी और अमानत, रिश्तेदारों से अच्छा व्यवहार, पड़ोसियों से अच्छा व्यवहार करने और बेवजह झगड़े और ख़ून बहाने से मना किया। निर्लज्जता से बचने के लिए कहा। उसने झूठ और अनाथों का माल खाने से मना कर दिया और पवित्र लोगों पर दोष लगाने से मना किया। हमने आदेश दिया कि हम अकेले ख़ुदा तआला की इबादत करें। हमने इसे स्वीकार कर लिया और इस पर अनुकरण किया। इस वजह से, हमारे देश के लोग हमारे ख़िलाफ हो गए हैं और हमें बहुत दु:ख देते हैं। मुसीबत में रखा और जब चरम हो गई तो हम अपना देश छोड़ कर आप की शरण में आ गए हैं क्योंकि आपके इंसाफ का बहुत सुना था। हे राजा, हम आशा करते हैं कि इस देश में हम पर कोई दुर्व्यवहार नहीं होगा। नजाशी इस से बहुत प्रभावित हुआ और कहा, "तुम्हारे रसूल पर जो कलाम उवतरित हुआ है उस में से कुछ पढ़ कर मुझे सुनाओ। इस पर उन्होंने सूर: मरियम की कुछ आयतें पढ़ कर सुनाई और इतनी अच्छी तरह से पढ़ी कि नजाशी रोने लगा। उस की आँखों में आँसू आ गए और कहने लगा कि ख़ुदा की कमस यह कलाम और मूसा का कलाम एक ही स्रोत निकले लगते हैं हैं। और मक्का के राजदूतों को बताया कि मैं इन लोगों को तुम्हें वापस नहीं लौटाऊंगा वे अब यहां रहेंगे। मक्का के इन राजदूतों ने सलाह के बाद यह तरकीब निकाली कि बादशाह को कहा कि यह लोग ईसा को ईसाइयों के विश्वास के अनुसार नहीं मानते और उसका दर कम करते हैं। राजा ने फिर मुसलमानों को बुलाया और हज़रत ईसा के बारे में विश्वास पूछा। इस पर हज़रत जाफ़र ने कहा कि इस बारे में हमारे नबी पर यह कलाम उतरा है कि ईसा अल्लाह का बंदा और उसका रसूल जो अल्लाह तआला ने कंवारी मर्यम को प्रदान फरमाया है। नजाशी ने पृथ्वी से एक तिनका उठाकर कहा कि ईसा का स्थान इस तिनके से अधिक नहीं जो आप ने वर्णन किया है और मुसलमानों को कहा कि यहां तुम्हें पूरी स्वतंत्रता है।

(अहमद बिन हंबल जिल्द 1 पृष्ठ 539 से 541 मसनद जाफ़र बिन अबी तालिब हदीस 1740 मुद्रित आलमुल कुतुब बैरूत 1998)

अपने ज्ञान, कुशलता और ज्ञान ने मुसलमानों को वहाँ रहने उपकरण प्रदान कह दिए।

एक साहिब एक मुसअब बिन उमैर था। उनकी मां बहुत अमीर थी। बहुत आराम में पले बढ़े थे। बहुत उत्तम कपड़े पहना करते थे। बड़े सुन्दर नौजवान थे।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद जिल्द 3 पृष्ठ 62 मसअब बिन उमैर मुद्रित दारुल अहया अल-अरबी बैरूत 1996 ई)

साद बिन अबी वक़ास कहते हैं कि हज़रत मसअब को आरमा के ज़माने में भी मैंने देखा है और मुसलमान होने के बाद भी देखा है। आपने अल्लाह तआला के रास्ते में बहुत दुख सहन किए। सअद कहते हैं कि मैंने देखा कि वही युवा जो बड़े आराम और नेअमतों में पला था उसकी कठोरता के कारण यह स्थिति थी कि शरीर से चमड़ी ऐसे उतरती थी जिस तरह सांप कैचुली उतारता है।

(असदुल ग़ाबा जिल्द 4 पृष्ठ 388 मसअब बन उमैर मुद्रित दारुल फिक्र बैरूत 2003 ई)

एक दिन आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मुसअब को इस हालत में देखा कि मज्लिस में आए तो जोड़ लगे कपड़ों में। कपड़े के कई जोड़ भई नहीं थे। जो चमड़े कहीं से मिला वे भी कपड़ों पर जोड़ लगा लिया। सहाबा ने उनकी शान व शौकत पहले भी देखी थी। इसलिए बहुत सारों ने उनकी यह हालत देखकर सिर झुका लिया क्योंकि वह उनकी मदद करने से भी असमर्थ थे। जब सभा में आकर हज़रत मसअब ने सलाम किया तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुहब्बत से सलाम का जवाब दिया और अमीर व्यक्ति की पहली स्थिति और वर्तमान स्थिति को देखकर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आंखों में आंसू आ गए। फिर आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आपको प्रोत्साहित देते हुए फरमाया कि "अल्हम्दो लिल्लाह दुनिया वालों को उन की दुनिया नसीब।

मैंने मुसअब को उस ज़माने में देखा है जब मक्का शहर में इन से बढ़ कर कर कौई दौलत वाला नहीं था। यह माता पिता की प्यारी औलाद थी और इसे खाने पीने का सारी नेअमतें मौजूद थीं। परन्तु ख़ुदा के रसूल प्यार की मुहब्बत ने इसे इस अवस्था में पहुंचाया है और जब उस ने वह सब कुछ अल्लाह तआला के रसूल के लिए छोड़ दिया तो फिर अल्लाह तआला ने उस के चेहरा को नूर प्रदान किया।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद जिल्द 3 पृष्ठ 62 मसअब बन उमैर मुद्रित दारुल अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996 ई) (कनज़ुलउम्माल जिल्द 13 पृष्ठ 582 हदीस 37494 मसअब बन उमैर मुद्रित मोअस्स अर्रिसाला 1985ई)

हज़रत मुसअब को तब्लीग़ करने का भी तरीका था। बड़े प्यार से तब्लीग़ करते थे और तब्लीग़ करने वालों को कहा करते थे कि अगर मेरी बातें पसंद आएं तो सुनो। न पसन्द आएं तो मत सुनो, उठ कर चले जाओ और इस प्रकार, आपने मदीना के अजनबियों को इस्लाम का पैग़ाम पंहुचाया और बहुत सारे लोग आप की तबालीग़ के कारण से मुसलमान हुए।

(सीरत इब्ने हिशाम मुख्य 311 अलअकबुतल अव्वल ... असद बिन ज़ुरारह मुसअब बिन उमैर ... मुद्रित दारुल कुतुब अल इल्मिया बैरूत 2001ई)

हज़रत साद बिन रबी एक और अंसारी सहाबी थे। जब मदीना में हिजरत के बाद आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भाईचारा की सिलिसला स्थापित किया तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ का भाई बनाया। वे उन्हें अपने ही घर ले गए। खूब मेहमान नवाज़ी की और फिर कहा कि इस भाईचारे के रिश्ते को बढ़ाने के लिए मेरा दिल चाहता है कि मैं अपनी आधी संपत्ति आप को दे दूं और फिर यहाँ तक कहा कि मेरी दो पत्नियां हैं जिसे आप चाहें मैं तलाक दे देता हूँ। आप उससे शादी करें। हज़रत अब्दुल रहमान बिन ऑफ की क्या मोमिनाना शान थी उन्होंने कहा कि तुम्हारी संपत्ति, तुम्हारी जायदादें और तुम्हारी पत्नियां तुम्हें मुबारक हों। अल्लाह इन में बरकत दे। और कहने लगे मैं एक व्यापारी आदमी हूं अपना गुज़ारा कर लूंगा तुम केवल मुझे मार्केट का रास्ता बता दो और तुम्हारी भावनाओं का बहुत बहुत धन्यवाद।

(सही अल्बुख़ारी किताब मनाक़िब अंसार हदीस 3780-3781)

इस तरह उन्होंने व्यापार किया और एक समय था कि वे बड़े अमीर व्यापारियों में शुमार होते थे। लाखों करोड़ों की आय होती थी।

हज़रत साद बिन रबी को भी जंगे उहद की लड़ाई में शामिल हुए थे और इस में शहीद हुए। और उस की घटना इस प्रकार लिखी है उबै बिन कअब कहते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब फरमाया कि साद बिन रबी का पता करो उसे दुश्मनों से घिरे हुए मैंने युद्ध के दौरान देखा था। तो कहते हैं कि मैं सअद को आवाज़ें देता हुआ निकला। जब साद को आवाज़ देता हुआ पहुंचा, तो उसने देखा कि वह ज़ख़्मों से चूर थे और एक जगह पड़े हुए हैं। कहते हैं मैंने उन्हें कहा कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे आपके पास भेजा है और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप को सलाम भेजा है और हाल पूछते हैं। हज़रत साद ने कहा कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मेरा भी सलाम कहना और निवेदन करना कि मुझे भाले और तीर के गंभीर घाव पहुंचे हैं। जीवित रहना कठिन लग रहा है और यह कहना कि हे अल्लाह के रसूल जितने ख़ुदा के पहले नबी गुज़रे हैं, उनकी आँखें जितनी अपनी क़ौम से ठंडीं हुईं ख़ुदा तआला उनसे बढ़कर आप की आँखें हम से ठंडी करे। और मेरी क़ौम को सलाम के बाद यह कहना कि जब तक ख़ुदा का रसूल तुम्हारे अंदर मौजूद है अमानत की रक्षा करना तुम पर अनिवार्य है। याद रखो जब तक एक व्यक्ति भी तुम्हारे अंदर जीवित मौजूद है अगर तुम ने इस अमानत की सुरक्षा में कोई कमी दिखाई तो क़यामत के दिन ख़ुदा तआला के समक्ष तुम्हारा कोई बहाना स्वीकार्य नहीं होगा। इस संदेश को छोड़कर आप इस दुनिया से विदा हो गए।

(असदुल ग़ाबा जिल्द 2 पृष्ठ 214 साद बिन अल रबी अंसारी मुद्रित दारुल फिक्र बैरूत 2003 ई)

हज़रत उसैद बिन हुज़ैर अंसारी को हज़रत मुसअब के द्वारा इस्लाम स्वीकार करने की सआदत मिली। उनके आध्यात्मिक स्थान के बारे में रिवायत है कि वह कहा करते थे कि मेरी तीन स्थितियाँ ऐसी हैं कि उनमें से कोई एक स्थिति भी मुझ पर तारी रहे तो मैं अपने आप को जन्नत वालों में से समझूंगा। पहली बात यह कि जब कुरआन की तिलावत करता हूँ या कोई और तिलावत करे और मैं सुन रहा हूँ तो उस समय कुरआन सुनकर मुझ पर जो खशियत की स्थिति छाती है अगर वह हमेशा रहे तो अपने आप को जन्नतियों में गिनो दूसरी बात यह कि जब नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खुत्बा इरशाद फ़रमाते हैं और मैं बहुत ध्यान से हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उपदेश सुनता हूँ तब मेरी जो हालत होती है अगर वह स्थायी हो तो जन्नितियों में से हो जाऊँ। कहते हैं तीसरे कि जब मैं किसी जनाज़े में शामिल हों तो मेरी यह हालत होती है कि मानो यह जनाज़ा मेरा है और मुझ से पूछा जा रहा है। अगर यह स्थिति स्थायी रहे जो भय की स्थिति है तो जन्नतियों में अपने आप को गिनूं।

(मजमअ अज़्ज़वाइद जिल्द 9 पृष्ठ 378 हदीस 15706 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2001 ई)

बहरहाल यह उनकी पूर्णता ख़शियत इलाही का प्रतीक है और यही स्थिति है जो इंसान को अल्लाह का डर दिलाती रहती है और व्यक्ति फिर भी अच्छे कर्म करने का प्रयास भी करता रहता है। अल्लाह तआला हर समय याद करता है। जहां तक इस बात का प्रश्न है कि इन की यह अवस्था हो तो मैं जन्नत वालों में शामिल हूं। जब विभिन्न रूप उत्पन्न हुए तो हर बार उनकी जो यह हालत होती है यह बात ही सिद्ध करती है कि वह वास्तव में जन्नतियों में से थे और ख़ुदा तआला की खुशी प्राप्त करने वाले थे।

उन का एक गुण इबादत और नमाज़ से एक गहरा प्यार है अपने मुहल्ले की मस्जिद के इमाम थे। बीमारी में भी मस्जिद में आया करते थे। कई बार जब खड़े होकर नमाज़ पढ़ना कठिन हो जाता था तब भी मस्जिद आकर बैठ कर नमाज़ पढ़ते थे।

(अत्तब्कातुल कुब्रा ले इब्ने साद जिल्द 3, सफ़ा 307 उसैद बिन हुज़ैर मुद्रित दारुल अहया अल-अरबी बैरूत 1996 ई)

ताकि जमाअत के साथ नमाज़ का सवाब न छोटे। यह उन लोगों की अवस्था ताकि हमारे लिए उन उपासकों के ये नमूने हैं।

आपकी राय भी बड़ी उत्तम होती थी। वह उत्तम सलाह देते थे। हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहो अन्हो हज़रत उसैद की राय आने के बाद कहते थे कि अब मतभेद उचित नहीं है।

उन्होंने हज़रत अबूबकर रज़ि और हज़रत उमर की ख़िलाफत का समय पाया। हज़रत उमर रज़ि की ख़िलाफत के दौरान यह वफात पाए और ख़िलाफत से असामान्य आज्ञाकारिता का व्यावहारिक नमूना दिखाया। आप औस कबीला के सरदार थे अपने कबीला से कहा कि अगर कोई और कबीला मदीना का मत भेद करता है तो कर हम ने मदभेद नहीं करना और हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहो अन्हो की बैअत करनी है।

(असदुल ग़ाबा जिल्द 1 पृष्ठ 130-131 उसैद बिन हुज़ैर मुद्रित दारुल फिक्र बैरूत 2003)

फिर एक अंसारी सहाबी उबयी बिन कअब थे। आप भी ज्ञान वाले थे। बड़ा नियमित पाचों नमाज़ें आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ अदा किया करते थे। नमाज़ों की पाबन्दी के बारे में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का एक इर्शाद बताते हैं कि फज्र की नमाज़ के बाद आप ने कुछ लोगों के बारे में पूछा कि वह दो व्यक्ति नमाज़ पर नहीं आए। फिर आपने फ़रमाया कि दो नमाज़ें सुबह और ईशा कमज़ोर ईमान वालों और मुनाफिकों पर बड़ी भारी हैं। अगर उन्हें पता हो कि उनकी नमाज़ का कितना इनाम है तो वह ज़रूर उन नमाज़ों में शामिल हों चाहे उन्हें अपने घुटनों के बल भी आना पड़े।

( मुस्नद अहमद बिन हंबल जिल्द 7 पृष्ठ 135 हदीस 21587 मुसनद अंसार हदीस अबी बसीर अलअबदी मुद्रित आलमुल कुतुब बैरूत 1998 ई)

फज्र और इशा की दो नमाज़ों के बारे में आप ने विशेष बल दिया है।

उनके कुछ मस्ले हल करने के बारे में भई रिवायतें हैं।

एक बार एक व्यक्ति ने हज़रत उबयी इब्न कअब से सवाल किया कि हमें यात्रा के दौरान एक चाबुक मिला है। ऊंटों या घोड़ों को चलाने के लिए छांटा है, चाबुक है, क्या करना है? हज़रत अबयी ने कहा कि यह तो एक चाबुक है मुझे एक बार सौ दीनार मिले थे। मैंने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि मुझे यह एक खोई हुई चीज़ मिली है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि एक साल तक इसकी घोषणा करते रहो कि यह खोई हुई चीज़ मुझे मिली है जिस की हो मुझ से निशानी बता कर प्राप्त कर ले। जब एक साल के घोषणा के बाद भी मालिक नहीं आया तो वे दिनार लेकर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, एक साल और

अधिक घोषणा करो, अत: एक साल और घोषणा की तथा जब इस के बाद भी कोई भी नहीं आया, तो फिर हाज़िर हो कर निवेदन किया कि साल गुज़र गया है कोई भी नहीं आया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, "एक वर्ष और घोषणा करो।" तीसरे वर्ष की घोषणा के बावजूद कोई भी नहीं आया, तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से चौथी बार पूछा। "अब बे-शक यह दिनार अपने उपयोग में लाएं।"

(सही अल्बुख़ारी हदीस 2437)

अत: यह हैं तक्वा की गुणवत्ता।

एक बार फिर उन्होंने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम न से निवेदन किया कि, "हे अल्लाह के रसूल जब मैं दुआ करता हूं तो मेरा दिल करता है कि मैं अधिक से अधिक आप पर दरूद भेजूं। अगर दुआ को चोथा हिस्सा आप पर पर दरूद भेजूं तो क्या ठीक है। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, "जितना तुम्हारा जी चेहा दरूद पढ़ लो। चाहो तो इस से अधिक पढ़ लो।"इस पर हज़रत उबई बिन कअब ने कहा कि अगर आधा समय दरूद पढ़ों तो क्या ठीक है आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जितना चाहो पढ़ो तो और अच्छा है। तब हज़रत उबई बिन कअब ने कहा कि अगर दो तिहाई हिस्सा दरूद भेजूं तो ठीक है आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जितना तुम्हारा दिल चाहे पढ़ो। इस से भी अधिक पढ़ सकते हो तब हज़रत उबई बिन कअब ने अपने दिल की इच्छा वर्णन करते हुए फरमाया हुज़ूर मेरा तो दिल करता है कि मैं अपनी नमाज़ में हुज़ूर पर दरूर ही पढ़ता रहूं। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया अगर तुम अपनी नमाज़ में दरूर पढ़ते रहोगे तो अल्लाह तआला तुम्हारे ग़मों को ख़ुद दूर करने वाला हो जाएगा। तुम्हारे गुनाह बख्श दिए जांएगे और यह बात तुम्हारे लिए बहुत ऊंचे स्तर का कारण होगी।

( सुनन अत्तिरमज़ी अबवाब अस्सिफत हदीस 2457)

आप को कुरआन शरीफ से बहुत मुहब्बत थी आप बहुत अधिक कुरआन शरीफ पढ़ा करते थे।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद जिल्द 3 पृष्ठ 260 मुद्रित दारुल अहया अल- अरबी बैरूत 1996 ई)

आपकी अमानत और ईमानदारी भी पूर्णता को पहुंची हुई थी। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक बार आपको ज़कात वुसूल करने के लिए नियुक्त किया और मदीना के निकट कबीला बनी अज़रह और बनी सअदह में भिजवाया। कहते हैं कि मैं ने वहा जा कर ज़कात वसूल की। वापसी पर मदीना के निकट एक श्रद्धालो से मुलाकात हुई जिस का सारे ऊंठों पर एक एक साल की ज़कात बनती थी इस के पास ऊंठ थे और उस की ज़कात एक साल की ऊंठनी बनती थी। मैंने उन्हें एक वर्षीय उंट ज़कात देने के लिए कहा था। उन्होंने कहा कि तुम एक वार्षिक ऊंठ के साथ क्या करूंगे? इस पर न तो सवार हुआ जा सकता है न सामान लादा जा सकता है मैं आप को ज़कात में बड़ी उमर की सुन्दर जवान उंटनी देता हूं। जो किसी काम भी आए। हज़रत उबई बिन कअब ने उसे कहा कि मैं तो केवल एक अमीन हूं अमानत इकट्ठा करने आया हूं मैं यह नहीं कर सकता कि बड़ी उमर की उंटनी लूं। दूसरी तरफ वह आदमी जो ईमानदार था बार-बार निवेदन कर रहा था कि बड़ी उमर की ऊंठनी ले लो। इस पर हज़रत उबई बिन कअब ने कहा कि फिर तुम ख़ुद रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में जाकर निवेदन कर लो। और ऊंटनी पेश कर दो। अत: वह सहाबी हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में पेश हुए। और सारी बात वर्णन की और कहा कि यह बड़ी ऊंटना स्वाकीर करें। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी कुरबानी पर बहुत ख़ुशी जताई और कहा अगर तुम दिली ख़ुशी से यह ऊंटनी देना चाहते हो तो अल्लाह तुम्हें इसका अच्छा इनाम देगा।

(मस्नद अहमद बिन हंबल जिल्द 7 पृष्ठ 139-140 हदीस 21603 मसनद अबी इब्न कअब मुद्रित आलेमुल कुतुब बैरूत 1998 ई)

हज़रत उबई बड़े इल्म वाले आदमी भी थे। कुरआन करीम का भी इन को ख़ूब ज्ञान था। उनकी मज्लिस में ख़ूब इल्मी बातें होती थीं। अत: कि उनकी एक मज़बूत स्थिति थी और उन का बहुत ऊंचा स्थान था और उन सहाबा के ही वह बहुत सबसे उंचे स्थान थे जिन का फैज़ आज भी जारी है और हम इन बातों से लाभ उठा रहे हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि:

" आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास वह क्या बात थी कि जिसके होने से सहाबा ने इस कदर सिदक दिखाया और उन्होंने न केवल बुतपरस्ती और सृष्टि की इबादत से मुंह मोड़ा बल्कि वास्तव उनके भीतर से दुनिया की मांग ही समाप्त हो गई। और वे ख़ुदा तआला को देखने लग गए। वह ख़ुदा तआला के मार्ग में बहुत सक्रिय था जैसे कि उनमें से प्रत्येक इब्राहीम था। उन्होंने पूर्ण श्रद्धा से ख़ुदा तआला की महिमा का प्रताप दिखाने के लिए वह काम किया जिस की तुलना इस के बाद कभी पैदा नहीं हुई और प्रसन्नता से धर्म के मार्ग पर ज़िब्ह होना स्वीकार किया बल्कि कुछ सहाबा ने जो पूर्ण रूप से शहादत न पाई तो उन को विचार हुआ कि शायद हमारी वफादारी में कोई कमी रह गई है। जैसा कि इस आयत में इशारा है مِنۡھُمۡ مَّنۡ قَضٰی نَحۡبَہٗ وَمِنۡھُمۡ مَّنۡ یَّنۡتَظِرُ (अल्अहज़ाब 24) अर्थात कुछ तो शहीद हो गए और कुछ इंतज़ार में थे कि कब उन को शहादत नसीब हो। आप फरमाते हैं कि अब देखना चाहिए कि क्या उन लोगों को दूसरों की तरफ आवश्यकताएं न थीं और औलाद की मुहब्बत और दूसरे सम्बन्ध न थे परन्तु इस कशिश ने उन को एसा मस्ताना बना दिया को धर्म को प्रत्येक वस्तु पर प्राथमिकता देते थे।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 6 पृष्ठ 137-138 संस्करण 1985 यू.के)

फिर आप फरमाते हैं:

" मक्का में बैठकर जो मोमेनीन क़ुरैश ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का समर्थन किया था जिसके समर्थन में कोई दूसरी क़ौम का आदमी उनके साथ साझा नहीं था सिवाय कुछ एक के। वह केवल ईमानी शक्ति और इर्फानी ताकत का समर्थन था। न कोई तलवार बाहर निकाली गई फेंक, और न कोई भाला हाथ में पकड़ा गया था, बल्कि उन्हें शारीरिक रूप से मुकाबला करने की सख्ती से मनाही थी। केवल ईमानी कुव्वत और इरफान के चमकदार हथियार और उन हथियारों का सार जो धैर्य और दृढ़ता और प्रेम और ईमानदारी और बैअत और मआरिफ़ इलाहिया और उच्च धार्मिक ज्ञान उन के पास थे। लोगों को दिखलाते थे। गालियां सुनते थे। जान की धमकिया दे कर डराए जाते थे। और सब प्रकार के ज़िल्लतें देखते थे पर कुछ ऐसे प्रेम के नशा में मदहोश थे कि किसी त्रुटि की परवाह नहीं करते थे और किसी बला से परेशान नहीं होते थे। सांसारिक जीवन की दृष्टि से उस समय आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास क्या रखा था जिसकी उम्मीद से वह अपनी जानों और इज़्ज़तों को ख़तरे में डालते थे और अपनी क़ौम से पुराने और लाभदायक संबंध को तोड़ लेते। उस समय तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर तंगी और सुविधा और असहायता का ज़माना था और भविष्य की उम्मीदें बांधने के लिए किसी प्रकार के सन्दर्भ व लक्षण मौजूद नहीं थे। अत: उन्होंने इस गरीब दरवेश का (जो वास्तव में एक भव्य राजा था) ऐसे नाज़ुक समय में सच्चाई के साथ प्रेम और इश्क से भरे हुए दिल से जो दामन पकड़ा जिस समय में भविष्य इकबाल की तो क्या उम्मीद, इस महान सुधारक की यह कुछ दिनों में जान जाती नज़र आती थी। यह वफादारी का संबंध केवल ईमान की ताकत के जोश से था जिस के जोश से वे अपनी जानें देने के लिए ऐसे खड़े हो गए जैसे बहुत का प्यासा मीठे चश्मा पर शक्तिहीन खड़ा हो जाता है। "

(इज़ाला औहाम, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 3 मुख्य 151-152 हाशिया)

सिरुल-खिलाफा में आप फरमाते हैं (अरबी है उसका अनुवाद भी पढ़ देता हूँ।)

اِعۡلَمُوۡا رَحِمَکُمُ اللّٰہُ اَنَّ الصَّحَابَۃَ کُلَّھُمۡ کَانُوۡا کَجَوَارِحِ رَسُوۡلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّمَ وَفَخۡرَ نَوۡعِ الۡاِنۡسَانِ فَبَعۡضُھُمۡ کَانُوۡا کَالۡعُیُوۡنِ وَبَعۡضُھُمۡ کَانُوۡا کَالۡآذَانِ وَ بَعۡضُھُمۡ کَالۡاَیۡدِیۡ وَبَعۡضُھُمۡ کَالۡاَرۡجُلِ مِنۡ رَّسُوۡلِ الرَّحۡمَانِ وَ کُلَّ مَا عَمِلُوۡا مِنۡ عَمَلٍ اَوۡ جَاھَدُوۡا مِنۡ جَھۡدٍ فَکَانَتۡ کُلُّھَا صَادِرَۃً بِھٰذِہِ الۡمُنَاسَبَاتِ وَ کَانُوۡا یَبۡغُوۡنَ بِھَا مَرۡضَاۃَ رَبِّ الۡکَائِنَاتِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ

(सिरुल-खिलाफा रूहानी ख़ज़ायन 8 पृष्ठ 341)

ख़ुदा तआला आप लोगों पर रहम फरमाए। जान लो कि सारे के सारे रसूल के सहाबा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अंगों और शरीर की तरह थे और मानव जाति का गर्व थे। उनमें से कुछ अल्लाह के रसूल के लिए आँखों की तरह थे। कुछ कान के समान थे और उनमें से कुछ हाथों और पैरों की तरह थे। उन सहाबा ने जो भी काम किए या जो भी कोशिश फरमाई वे सब कुछ उनके अंगों की तुलना से हुई और उनका उद्देश्य इससे केवल ब्रह्मांड के रब्बुलआलमीन ख़ुदा तआला की ख़ुशी प्राप्त करना था।

(सिरुल-खिलाफा रूहानी ख़ज़ायन 8 पृष्ठ 341)

अल्लाह इन चमकदार सितारों के नमूने पर चलते हुए हमें अल्लाह तआला और उसके रसूल से प्रेम करने वाला बनाए और हमारा भी हर कर्म अल्लाह तआला की ख़ुशी प्राप्त करने के लिए हो।

नमाज़ों के बाद, मैं नमाज़ जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा जो आदरणीया अरीशा डीफन थालर साहिब हॉलैंड का है जौ जो आज कल हालैंड में थीं। 11 दिसंबर को, 65 वर्ष की उम्र में, अचानक हृदय के दौरा के कारण 62 वर्ष की आयु में वफात पा गईं। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहे राजेऊन।

यह शिक्षा पूरी करने के बाद एक बैंक में काम करती थीं। 2002 ई में उनकी शादी हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबि रहमहुल्लाह की स्वीकृति से फहीम डीफन थालर साहिब जो डच अहमदी हैं उनसे हुई। उस समय स्वर्गीया ने इस्लाम को स्वीकार नहीं किया लेकिन जमाअत में रुचि थी। शादी के बाद, उन्होंने रमज़ान में एक महीने में तजुर्बा के रूप में रोज़े भी रखे। फहीम साहिब जो उनके पति हैं, यह भी डच अहमदी हैं। यह वर्णन करते हैं कि इसी समय जब हम बात कर रहे थे, तो उन्होंने रोना शुरू कर दिया। मैं समझा कि मैंने कोई सख़्त बात कह दी। बात में स्वर्गीया ने बताया वह अपना और अहमदियत तुलना कर रही थीं और फिर यह समझ कर कि मुझ में और अहमदियत में बहुत ज्यादा अंतर है मैं तो कभी भी अहमदी मुस्लिम नहीं बन सकती। इसलिए इस अभाव की भावना से मुझे रुला दिया। फहीम साहिब के साथ गैम्बिया के दौरे पर गईं तो वहां उन्होंने जमाअत कार्यों को देखा और उसका उन पर बड़ा अच्छा असर हुआ और उसके बाद फिर वहाँ फहीम साहिब ने उन्हें बैअत फार्म दिया तो बैअत फार्म पढ़ा, बैअत की शर्तें पढ़ीं, जो उस पर लिखी हुई थीं। पहले तो स्वर्गीया ने कह दिया कि मैं उस पर कभी हस्ताक्षर नहीं कर सकती लेकिन पढ़ने के बाद उन्होंने जल्दी ही 18 मार्च 2006 ई को बैअत फार्म भर दिया और उसी समय बैअत का पत्र भी मुझे लिखा। ख़िलाफत से बहुत प्यार था। वह जमाअत के कामों में अपने पति की मदद करती थीं। वह जमाअत हॉलैंड के प्रेस सचिव भी थे। और अनुवाद में उनकी मदद भी करती थीं। फिर जब वसीयत की तहरीक हुई और वसीयत की तहरीक का उन को पता लगा। मेरा ख़ुत्बा सुना तो उन्होंने जल्दी ही वसीयत कर दी । 2009 ई में स्वर्गीया ने अपने पति आदरणीय फहीम साहिब के साथ वक्फ कर के कर हियूमेन्टी फर्सट के अधीन बनने वाले अनाथालय की व्यवस्था संभालने के लिए बेनिन (पश्चिम अफ्रीका) चली गईं। ज़ाहिरी तौर पर यह एक भावपूर्ण निर्णय लगता था क्योंकि स्वर्गीया की बैंक में एक बहुत अच्छी नौकरी थी, काम था इस को पीछे छोड़ कर गई थीं। मुरब्बी इंचार्ज हॉलैंड ने कहा कि मैंने उन्हें समझाने की कोशिश की कि अफ्रीका के हालात इतने सहज नहीं हैं ताकि मानसिक रूप से तैयार हों तो मरहूमा ने कहा मुरब्बी साहिब मुझे यह सब मत बताए। मैंने बड़ा सोच समझ कर फैसला किया है उनके रिश्तेदारों ने भी उन्हें कहा कि आप अफ्रीका चली गई हैं और उन्होंने समझा कि वहाँ जमाअत अहमदिया भी कोई कंपनी की तरह है कि कंपनियों का दिवालिया हो जाता है तो उसके बाद कुछ नहीं रहता तो तुम भी न इधर की रहो हो और न उधर की। बड़ा मजबूत ईमान था, तो उन्होंने अपने रिश्तेदारों को, ईसाई भाई बहनों को जवाब दिया कि तुम्हें इस बात की चिंता नहीं होनी चाहिए। जमाअत किसी कंपनी की तरह नहीं है जो दिवालिया हो जाए। यह भी दिवालिया नहीं हो सकती। और जहां तक मेरा सवाल है, अगर मैं मर गई तो इस बात को पसन्द करूंगी कि इस अनाथालय में दफन की जाऊं। स्वर्गीया जो यूरोपीय समाज की पत्नी लिए बड़ी थी और बहुत अच्छी नौकरी भी थी इस के बावजूद अफ्रीका में बड़ी मुश्किल परिस्थितियों में उन्होंने बड़े उत्तम रूप से अपना वक्फ निभाया और बड़ी ज़िम्मेदारी के साथ अपने कर्तव्यों का पालन किया।

नमाज़ों की पाबन्द थीं। जब से अहमदी हुई नियमित नमाज़ों को पढ़ने वाली थीं। फिर तहज्जुद पढ़ने वाली भी बन गईं। कभी नमाज़ नहीं छोड़ती थीं बल्कि दूसरों को भी समय से नमाज़ अदा करने का कहती थीं। ख़ुत्बा बहुत ध्यान पूर्वक और सावधानी से सुनती थीं और जो जो बातें अगर नसीहत वाली हैं तो सारी बातों पर अनुकरण करने की कोशिश करती थीं। इस्लाम और अहमदियत से प्यार का अंदाज़ा इस बात से हो सकता है जब दूसरे अहमदी लोगों को देखतीं कि अहमदी हैं परन्तु पूरी तरह अहमदियत का पालन नहीं करते तो दुखी हो जाती थीं। क़ुरआन करीम के नियमित पालन करने वाली थीं। और अनुवाद और तफ़सीर के साथ समझने की कोशिश करतीं। उन की औलाद नहीं थी। यतीम खाना की इन्चार्ज थीं। उन्होंने उन को अपने बच्चे समझा। अहमद यह्या साहिब ह्यूमेन्टी फर्सट के जो हैं वह कहते हैं कि वहां का यतीम ख़ाना दारुल इकराम में दो महीने से लेकर बारह सात तक कि आयु के बच्चे थे यद्यपि स्टाफ मौजूद था परन्तु दो माह की यतीम बच्ची प्रत्येक समय उन की गोद में मैंने देखी । किसी बच्चे की तबीयत ठीक न होती तो बहुत फिक्र से इस की ख़ुराक और दवाई का प्रबन्ध करतीं। अगर बच्चे की शैक्षिक रिपोर्ट में कोई ध्यान देने योग्य बात होती तो उस को विभिन्न तरीकों से ठीक करने के लिए बहुत फिक्र को प्रकट करतीं। कहते हैं मैंने जब भी उन्हें व्यक्तिगत जरूरत के हवाले से पूछा कि कोई ज़रूरत हो तो बताएं तो उन का यही जवाब होता था कि हम तो वक्फ हैं । हम ने वक्फ किया हुआ है अल्लाह तआला के बहुत शुक्र करने वाले हैं कि उस ने हमें तौफ़ीक दी हुई है और यतीम बच्चों की सेवा का मौका मिला हुआ है और हम बहुत ख़ुश हैं। हमारे लिए फिक्र ने करें। परन्तु यदि संस्था के प्रबन्ध का कोई मामला होता इस की उन्नति का मामला होता तो शीघ्र ध्यान दिलातीं। इसी प्रकार अज़हर ज़ुबैर साहिब जो ह्यूमेन्टी फर्सट के चैयरमैन हैं वह कहते हैं कि उन के पति फहीम साहिब ने बताया कि शुरू से उन को लाटरी खेलने का बहुत शौक था। यूरोप में लाटरी का बहुत रिवाज है जब इन को बताया गया कि इस्लाम में इस की मनाही है तो शीघ्र इस को छोड़ दिया और लाटरी में लगाने वाली रकम साप्ताहिक मस्जिद के चन्दा में देना शुरू कर दिया।

फिर कहते हैं कि जब मैं उनसे मिलता, तो मेरे दौरों के बारे में रिपोर्टें लेतीं। डॉ। अतहर ज़ुबैर साहिब जर्मनी के दौरा में हमारे साथ रहा करते थे, तो कहते हैं बातें सुन के, घटनाओं को सुन कर बहुत भावपूर्ण हो जाया करती थीं। बड़ी मेहमान नवाज़ थीं। वहाँ के लोगों से बहुत प्यार और सम्मान से मिला करती थीं। उसी प्यार की वजह से बैनिन में जहां वह रहती थीं, उनके मुहल्ले के लोग उन्हें 'मामा' कहते थे और अपने निजी मामलों में उनके साथ परामर्श करते थे। बेनिन की अमीर जमाअत लिखते हैं कि उनके अपने चन्दे की बड़ी फिक्र रहती थी। बड़ा नियमित अपना चन्दा अदा किया करती थीं, और पोरतो नारविजन क्षेत्र के मुबल्लग़ सिलसिला से दो तीन बार कहा कि आप समय पर आकर हमारा चन्दा ले लिया करें। हमेशा पहली फुर्सत में अपना वसीयत का चन्दा अदा करतीं और अब जब मैंने बैयतुल फ़ुतूह की दोबारा निर्माण की तहरीक की तो इस में उन्होंने बहुत खुशी में भाग लिया और जानकारी भी लेती रहती थीं।। कहते हैं कि 'अहमदिया दारुल अकराम अनाथालय में बहुत श्रद्धा से काम करती थीं। दूध पीने वाले बच्चों को उठाए फिरतीं। इनकी वफ़ात के साथ मैं समझता हूं कि दारुल इकराम के बच्चे अब अनाथ हो गए हैं। अल्लाह तआला उन के स्तर ऊंचे करे और रहम और क्षमा के व्यवहार करे और बहुत से ऐसे वफादार और वक्फ की रूह को समझने वाले अल्लाह तआला जमाअत को प्रदान करे।

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

**नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :**

**1800 3010 2131**

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

# सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का दौरा जर्मनी, अगस्त 2017 ई. (भाग -7)

**☆ जलसा जर्मनी के अवसर पर आलमी( विश्वव्यापी) बैअत,शिक्षा के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने वाले और उच्च प्रदर्शन करने वाले छात्रों को प्रमाण पत्र और पदक दिया जाना।**

**हम अहमदी इस बात के गवाह हैं और घोषणा करते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार जिस मसीह व महदी ने आना था वह आया और उसने अपने मसीह और महदी होने का दावा किया और केवल दावा ही नहीं किया बल्कि मसीह व महदी के आगमन से संबंधित आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वर्णन की गई निशानियों और ख़ुदा तआला के अपनी पुस्तक में वर्णन की गई परिस्थितियों व निशान जो आने वाले मसीह और महदी के समय से संबंधित थे, हमने पूरे होते देखा और देख रहे हैं,**

## जलसा सालाना जर्मनी के अन्तिम दिन सय्यदना हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला का ख़िताब।

**(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)**

**(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)**

* एक मेहमान श्री साइमन ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि इमाम जमाअत अहमदिया ने जो भी वर्णन किया वह सच और ईमानदारी से भरा हुआ था। महान साहस के साथ अपने मकसद को प्रस्तुत किया। बिना डर और खतरे के उन्होंने अपने वक्तव्य को प्रमाणित किया। उन्होंने अपने ख़िताब में भेदभाव द्वेष और आतंकवाद जैसे समकालीन सभी मामलों को कवर किया और उनके विषय में इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं को प्रस्तुत किया। मैं आप के ख़लीफा को कहना चाहता हूँ कि आप अकेले नहीं हैं बल्कि मैं भी उनका यह संदेश फैलाने में उनके साथ हूँ, क्योंकि ख़लीफा के शब्दों में केवल भलाई ही नज़र आती है।

* एक मेहमान श्री जौनस साहिब ने वर्णन किया। इमाम जमाअत अहमदिया एक आध्यात्मिक नेता हैं और आज मैंने देखा है कि आपके शब्द बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण होते हैं। आपके सम्बोधन का हर शब्द अर्थों से परिपूर्ण था मुझे विशेष रूप से द्वितीय विश्व युद्ध के विनाश का उल्लेख अच्छा लगा है कि हमें इस ग़लती को दोहराना नहीं चाहिए। ख़लीफा ने कहा कि हथियारों की दौड़ हो रही है। * श्रीमती ली, एक मेहमान महिला, ने कहा कि इमाम जमाअत अहमदिया की सब से पहली चीज़ आप को नज़र आती है वह उन का शांतिपूर्ण होना और ख़ुश रहना है आपके चेहरे पर एक ऐसी सुन्दरता है जो अविश्वसनीय है आपके ख़िताब की सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह थी जब आपने यह कहा था कि हर इंसान के मानवाधिकार हैं और इस्लाम दूसरों के अधिकार नहीं छीनता बल्कि कलीसियाओं, मंदिरों और इबादतगाहों की सुरक्षा में सबसे आगे है। मुझे यह भी बहुत अच्छा लगा कि उन्होंने इस बात को भी स्वीकार किया कि मुसलमानों के अंदर भी समस्याएं हैं लेकिन इसके साथ ही उन्होंने यह भी स्पष्ट रूप से बताया इसमें इस्लाम का कोई दोष नहीं है। उसने इस बारे में कुरआन की आयतें और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उदाहरणों के साथ समझाया। ख़िताब के अंत में बहुत भावुक हो गई और मैं अपने आप को बहुत भाग्यशाली समझ रही थी कि मैं भी इस समारोह में शामिल थी।

* एक स्वीडिश मेहमान श्री Andrea ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि इमाम जमाअत अहमदिया का ख़िताब सुनने के बाद एक ही बात कहूँगा कि मीडिया आज इस्लाम की जो तस्वीर पेश कर रहा है वह बड़ा अन्याय है। जहां तक मेरा सम्बन्ध है तो मैं उस आदमी चक जिसे मैं जानता हूं यह सन्देश पहुंचाने की कोशिश करूंगा।

**27 अगस्त 2017 (दिनांक सोमवार )**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े पांच बजे मर्दाना जलसा गाह में पधार कर फजर की नमाज़ पढ़ाई। नमाज़ अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने आवासीय भाग में चले गए।

**आलमी( विश्वव्यापी) बैअत**

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने दफतर की डाक देखी। और दफतर के विभिन्न कामों को किया। आज जमाअत अहमदिया जर्मनी के जलसा सालाना का तीसरा और अन्तिम दिन था। कार्यक्रम के अनुसार पौने चार बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ मर्दाना जलसा गाह में पधार कर नमाज़ ज़ुहर और असर जमा करके पढ़ाई। इस के बाद, कार्यक्रम के अनुसार बैअत आयोजित की गई थी। यह एक विश्वव्यापी बैअत थी जो mta अन्तर्राष्ट्रीय के द्वारा दुनिया भर में सीधा लाइव प्रसारण हुई और दुनिया के सभी देशों में बसे अहमदी मित्रों ने इस संचार सम्पर्क के ज़रिए अपने प्यारे आक़ा की बैअत की सआदत पाई। आज हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ के दस्ते मुबारक पर अल्बानिया, जाम्बिया, गाना, जर्मनी, इराक, यमन, मोरक्को, जॉर्डन, सीरिया, तुर्की और लिथुआनिया से संबंधित 33 लोगों ने बैअत का सौभाग्य पाया। अंत में हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई।

**समापन सत्र-जलसा सालाना जर्मनी**

बैअत समारोह के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ जलसा के समापन समारोह के लिए जैसे ही मंच पर आए तो सारा जलसा गाह गगनभेदी नारों से गूंज उठा और जमाअत के मित्रों ने बड़े भावुक अंदाज़ में नारे बुलंद किए।

समापन समारोह का आरम्भ कुरआन की तिलावत से हुआ जो आदरणीय मुहम्मद इलियास मुनीर साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला जर्मनी ने की और इस के बाद इसका उर्दू अनुवाद पेश किया और जर्मन अनुवाद आदरणीय अरबाब अहमद साहिब मुबल्लिग़ जर्मनी ने पेश किया। इसके बाद प्रिय मुर्तजा मन्नान छात्र जामिया अहमदिया जर्मनी ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का मंज़ूम कलाम

हर तरफ फ़िक्र को दौड़ा के थकाया हम ने
कोई दीं दीने मुहम्मद सा न पाया हम ने

पेश किया। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने शिक्षा के क्षेत्र में स्पष्ट सफलता प्राप्त करने वाले और उच्च प्रदर्शन करने वाले छात्रों को प्रमाण पत्र और पदक प्रदान किए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ के दस्ते मुबारक निम्नलिखित ख़ुशनसीब छात्रों ने शैक्षिक पुरस्कार प्राप्त किए।

उबैदह रशीद राणा साहिब पी.एच.डी। चिकित्सक, डॉ सुल्तान मुहम्मद साहिब पी.एच.डी जैव रासायनिक इंजीनियरिंग, ओसामा अहमद साहिब स्टेट इगज़ामीनिशन शिक्षण , आसिम अहमद साहिब स्टेट इगज़ामीनिशन मैडिकल , नवीद अली मंसूर साहिब मजिस्टर इन अंतरराष्ट्रीय क़ानून मास्टर्स ऑफ इंटरनेशनल लॉ, सजावल अहमद साहिब एम.एस.सी इन कंप्यूटर विज्ञान , बसीर अहमद शेख साहिब स्नातकोत्तर सिविल इंजीनियरिंग, इरफान अहमद साहिब एम.एस.एस कंप्यूटिंग इंजीनियरिंग, मोमिन अहमद भट्टी, एम.एस.एस.सी भौतिकी, बाबर मोहिउद्दीन बट साहिब मास्टर आफ इंजीनियरिंग इंस्ट्रुमेंटल इंजीनियरिंग, अब्दुल मुताल अहमद साहिब एम.एस.सी इन विद्युत और कंप्यूटर इंजीनियरिंग, मुनव्वर अहमद ख़लील साहिब मास्टर ऑफ आर्ट्स इन यूरोपियन मास्टर इन परियोजना प्रबंधन, इरफान अहमद मन्नान साहिब एम.एस.सी इन सिविल इंजीनियरिंग, राफेअ अहमद पाल साहिब मास्टर ऑफ इंजीनियरिंग इन इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग, इब्राहिम अहमद

ख़लील साहिब मास्टर ऑफ इंजीनियरिंग इन परीतियज़न इंजीनियरिंग, फरहान अहमद साहिब एम.एस सी इन मैकेनिकल इंजीनियरिंग ,फर्रुख़ क़य्यूम साहिब एम.एस.सी इन मैकनिकल इंजीनियरिंग, डॉक्टर अबरार अहमद साहिब मास्टर ऑफ पब्लिक हेल्थ, आमिर सईद खान एम.एस.सी मैलीक्योज़ लाइफ साइंसेज, तौकीर सोहेल अहमद, एम.एस.एस इन मैडिकल इंजीनियरिंग, इस्माइल ताहिर साहिब एमबीए इन अन्तर्राष्ट्रीय रियल एस्टेट प्रबंधन, नोमान नासिर साहिब मास्टर ऑफ आर्ट्स इन पॉलिटिकल विज्ञान, राना जियाउल्लाह साहिब एम.एस.सी इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग, शाहिद कलीम, एम.एसएस.सी द पावर इंजीनियरिंग, रज़वान मलिक साहिब एम.एस.सी सूचना प्रबंधन , इमरान मुनीर मलिक, एम.एस.एस इंटरनेशनल फाइनेंस, अताउल वहीद ख़ान साहिब, एमएस अर्थशास्त्र और कंप्यूटर विज्ञान, यासीर अयाज़, एम.एस.एस.सी कृषि जैव प्रौद्योगिकी में, मुबारक एलियास साहिब, एम.एस.एस.सी इन बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन ,अदनान ख़ान मास्टर ऑफ इंजीनियरिंग इन पराडकशन और ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग, उस्मान हादी अहमद साहिब डिप्लोमा स्नातकोत्तर इन एरोनॉटिकल इंजीनियरिंग, दिल ख़ान बीए इन आर्किटेक्चर, मुहम्मद ताहा एजाज़ साहिब बी.एस.सी इन अर्थशास्त्र कंप्यूटर विज्ञान, रफाकत अहमद साहिब बी.ए इन बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन, लबीद महमूद साहिब बीए इन बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन, आदिल अहमद अनवर साहिब बीए इन मीडिया विज्ञान, तैयब अहमद कैसर साहिब बीए इन इंटरनेशनल बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन, सफीर अहमद साहिब बीएससी इन चिकित्सा सूचना, Jacinto Munoz Nunez साहिब बी ए अर्थव्यवस्था और प्रबंधन, वाहिद अली मजीद वड़ैच साहिब बी.एस. सी इन बायोलॉजी, नबील अहमद काज़ी साहिब स्नातक इंजीनियरिंग इन तकनीकी सूचना, शाफी अहमद पाल साहिब बीए इन इस्लामिक अध्ययन, मुदब्बिर अहमद ख़ान बीए इन लंगोयस्टिकस एंड फिलासफी, लबीद अहमद सोलंकी साहिब ए स्तर एबी टूर, अली फ़राज़ चौधरी साहिब ए स्तर एबी टूर, वहीद अहमद साहिब पी.एच.डी इन ग्रीन कंप्यूटिंग, मुनीब इदरीस अहमद साहिब पी.एच.डी इन मैडिकल साइंस, अदील हुसैन साहिब पी.एच.डी इन अंतरराष्ट्रीय लॉ फ्रॉम यू के, अब्दुल अज़ीम अहमद साहिब एम.ए इन अरबी भाषा और साहित्य, महमूद अहमद नजम एम.ए अंतर्राष्ट्रीय पत्रकारिता में , मुहम्मद मकसूद साहिब एम.एस.सी इन वस्त्र इंजीनियरिंग, तलहा रशीद साहिब एम.एस.सी इन बायोमेडीकल रिसर्च,हबीब नबी हलवी साहिब एम.एस.सी इन इपलाईड कंप्यूटर विज्ञान, शकील अहमद साहिब एम.एस.सी इन सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग फ्रॉम पाकिस्तान, डॉक्टर तलहा बट साहिब स्नातक चिकित्सा, स्नातक सर्जरी एम.बी.बी.एस, शाहबाज अहमद साहिब बी.एस. सी इन जयूलोजी, बाबर अहमद नईम साहिब स्नातक इंजीनियरिंग इन एरोनॉटिकल इंजीनियरिंग, इनामुल हक अल्वी साहिब स्नातक अंतरराष्ट्रीय प्रौद्योगिकी इन उद्यम सूचना, बेसल अहमद साहिब बी.ए इन आर्किटेक्चर, नासिर अहमद मुग़ल स्नातक रूसी भाषा और साहित्य में, समीन रहमान साहिब मध्यवर्ती पूर्व इंजीनियरिंग, अरीब अहमद साहिब टॉप इन पर्यावरण प्रबंधन - मुबारिज़ अहमद साहिब टॉप इन बाथरमीटकस एंड एकाउंटिंग, यनीब नियाज़ी साहिब सेकेंडरी स्कूल नब्बे प्रतिशत।

पुरस्कार वितरण समारोह के बाद 4 बजकर 55 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने अपना समापन भाषण फरमाया।

**समापन भाषण**

तशहुद्द तऊज़ और सूरत फातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: दुनिया में जितने भी धर्म हैं उनका विरोध उनकी शुरुआत में हुआ और एक समय तक यह विरोध का युग चलता और फिर धीरे-धीरे, वह विरोध का युग उस तरह नहीं रहा। इस युग में इस्लाम धर्म के अतिरिक्त कोई धर्म ऐसा नहीं जिस का धर्म के मामले में विरोध हो रहा है। मुशरिकीन मक्का ने इस्लाम को फैलने से रोकने और समाप्त करने और मुसलमानों को कष्ट पहुंचाने और समाप्त करने के अपने संसाधनों और अपनी शक्ति और अपने तरीके से कोशिश की और फिर विभिन्न दौरों में यह प्रयास होते रहे। जब ज़माना किताबें लिखने और प्रेस का आया तो मुसतशरेकीन ने इस्लाम के विरोध में ऐतिहासिक तथ्यों को ग़लत रंग में लिखकर और कुरआन की ग़लत व्याख्या कर के इसका विरोध किया और आज तक जैसा कि मैंने कहा कि यह विरोध का सिलसिला जारी है और दुर्भाग्य से मुसलमानों का एक वर्ग जो चरमपंथी और तथाकथित जिहादी समूह भी शामिल हैं और मुसलमान उलेमा का एक वर्ग जिन्हें तथाकथित उलमा कहना चाहिए जिन्हें न कुरआन की शिक्षा पर विचार करने और उसे समझने की क्षमता है और न ही इतिहास का सही विश्लेषण की क्षमता और ज्ञान। उन्होंने इस्लाम के विरोधियों के लिए अपने विचार फैलाने और इस्लाम की एक झूठी तस्वीर प्रस्तुत करने का अवसर दिया हुआ है बल्कि कई ऐतिहासिक तथ्य जिनका उन्हें पता नहीं मुसतशरकीन के इतिहास को देखकर वे समझते हैं कि इस्लाम का इतिहास है और इससे भी बढ़कर अब और पहले भी मुसलमान सरकारों ने अपनी सरकारों की ग़लत प्रणाली चलाकर अपनी प्रजा पर अत्याचार करके और अधिक इस्लाम के विरोधियों के विचारों को बड़ाया है और यह कहने का अवसर मिला कि देखो जो लोग जो हुकूमतें जो नेता अपनी प्रजा को अत्याचारपूर्ण रूप से मार सकते हैं उन से दूसरों पर, दूसरे धर्मों पर अत्याचार करने की क्या आशा रखी जा सकती है। लेकिन ये बातें भी इस्लाम और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चाई की दलीलें भी हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: एक तो इस्लाम विरोधी ताकतों के बयान और किताबें लिखना और उसके ऐतिहासिक तथ्यों को तोड़मरोड़ कर पेश करना इस बात की दलील है कि उन्हें खतरा है और दिल में यह चिंता है कि क्योंकि अब भी मुसलमानों का एक वर्ग अपनी दीनी तालीम पर स्थापित है और अब भी कुरआन अपनी असली स्थिति में मौजूद है और इंशा अल्लाह तआला हमेशा रहना है और यह अल्लाह तआला का वादा है, कहीं ऐसा न हो कि एक समय में इस्लाम दुनिया का सबसे बड़ा धर्म बन जाए और उस के मानने वाले सब दूसरे धर्मों के मानने वालों से अधिक हो जाएं इसलिए, वह इस्लाम का विरोध करने में अपनी पूरी कोशिश कर रहे हैं, कि किस प्रकार इसे खत्म किया जाए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: दूसरे जहाँ तक मुसलमान उलमा और राजाओं का सवाल है तो इस की भविष्यवाणी भी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमा दी थी कि एक समय के बाद न न्यायप्रिय राजा मुसलमानों में रहेंगे और न ही ज्ञान तथा व्यवहार वाले उलमा रहेंगे। कुरआन करीम का समझ उन को होगी, बल्कि वे आसमान के नीचे सबसे ख़राब सृष्टि होंगे। ऐसे हालात में फिर ख़ुदा तआला मसीह मौऊद और महदी मऔऊद को भेजेगा जो इस्लाम की वास्तविकता दुनिया को बताएगा। मुसलमानों का भी सही मार्गदर्शन करेगा और दुनिया को भी बताएगा कि इस्लाम की वास्तविक शिक्षा क्या है और इस्लाम की शिक्षा पर जो आरोप लगाए जाते हैं उनकी सच्चाई क्या है और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हस्ती को आप की ओर ग़लत बातें सम्बंधित करके, आरोप का निशाना बनाया जाता है उसकी वास्तविकता क्या है, वह दुनिया को बताएगा कि तुम जिस नबी और जिस धर्म को दुनिया के लिए विनाशकारी होने की कल्पना करते हो, वही वास्तव में दुनिया के अस्तित्व का ज़ामिन है। घरेलू, पारिवारिक मामलों और बच्चों के प्रशिक्षण से लेकर आपस के सामाजिक संबंधों, रिश्तों के अधिकारों और समाज के अधिकारों तक और वाणिज्यिक लेनदेन और सरकार चलाने के तरीके से लेकर अंतरराष्ट्रीय संबंधों और सरकारों के आपस के संबंध और विश्व शांति की गारंटी और इस्लाम के सच्चे शिक्षण परस्पर संबंध तक आने वाले मसीह और महदी को बताएगा। इस्लाम पर आपत्ति करने वाले इस्लाम पर आपत्ति भी बड़ी शिद्दत से पेश करते हैं कि इस्लाम आतंकवादी धर्म है वह यह भी बताएगा और आरोप को भी अस्वीकार करेगा कि इस्लाम युद्धों द्वारा फैला और यह न ही आतंकवादी धर्म है और ये सब कुछ कुरआन करीम की शिक्षा और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श से प्रमाणित करेगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: हम अहमदी इस बात के गवाह हैं और घोषणा करते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार जिस मसीह व महदी ने आना था वह आया और उसने अपने मसीह और महदी होने का दावा किया और केवल दावा ही नहीं की बल्कि मसीह महदी के आगमन से संबंधित आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वर्णन की गई निशानियों और ख़ुदा तआला के अपनी पुस्तक में वर्णन की गई परिस्थितियों व निशान जो आने वाले मसीह और महदी के समय से संबंधित थे, हमने पूरा होते देखा और देख रहे हैं, चंद्रमा सूर्यो के ग्रहण के रमज़ान के महीने और विशेष तिथियों में लगने के निशान को पूर्व तथा पश्चिम के अख़बारों ने आप के दावे के बाद पूरा होने की खबर के साथ आज से लगभग 120 साल पहले सुरक्षित कर लिया । बहरहाल इन भविष्यवाणियों और संकेतों की एक लंबी श्रृंखला है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: इस समय जो मैं बयान करना चाहता हूँ और जैसा कि मैंने शुरू में कहा था इस्लाम और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जो आपत्तियां हैं उनमें सबसे बड़ा आरोप जिसे आजकल दुनिया में पेश किया जाता है और बड़ी तीव्रता के साथ पश्चिमी मीडिया भी इस्लाम विरोधी शक्तियां पेश कर रही हैं, यह इस्लाम और

इस्लाम की युद्ध की शिक्षा और इस्लाम का आतंकवादी तथा चरमपंथी धर्म होना है। वास्तव में, यह एक ऐसा आरोप है जिसका इस्लामी शिक्षा या आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस आरोप को दूर कर के इस्लामी जंगों और युद्धों की वास्तविकता खोल कर बताई है। अत: यह हमारी ख़ुश किस्मती है कि हम ही हैं जो सही रूप से इस वास्तविकता को जानते हैं। अत: इस हकीकत को बताते हुए आप फरमाते हैं कि

"हम यह साबित कर सकते हैं कि इस्लामी युद्ध बिल्कुल रक्षात्मक युद्ध था।" फिर आपने फ़रमाया कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और अपने सेवकों को मक्का वालों ने बराबर तेरह साल तक खतरनाक तकलीफें और कष्ट दिए और तरह तरह के दु:ख इन अत्याचारियों ने दिए। अत: उनमें से कई मारे गए और कुछ भयंकर अज़ाबों द्वारा मारे गए । इसलिए तारीख पढ़ने वालों से यह बात छिपी नहीं है कि ग़रीब महिलाओं को सख्त शर्मनाक कष्टों के साथ मार दिया यहाँ तक कि एक महिला को दो ऊंटों से बांध दिया और फिर उन्हें विरोधी निर्देश में दौड़ा दिया और बेचारी को चीर डाला। इस प्रकार कष्टों और तकलीफों को बराबर तेरह साल तक आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप की पवित्र जमाअत ने बड़े धैर्य और साहस के साथ सामना किया। उस पर भी उन्होंने अपने ज़ुल्म को न रोका और अंतत: खुद आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हत्या की योजना की और जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुदा तआला से उनकी शरारत की ख़बर पाकर मक्का से मदीना के लिए चले गए फिर भी उन्होंने ने पीछा किया और अंत जब यह लोग फिर मदीना पर चढ़ाई करने गए तो अल्लाह तआला ने उनके हमलों को रोकने का आदेश दिया क्योंकि अब वह समय आ गया था कि मक्का वालों को अपनी कुटिलता की युक्तियों और शोख़ियों के इल्ज़ाम में सज़ा का मज़ा चखें। तो ख़ुदा तआला ने वादा किया था कि यदि वे अपने बुरे कामों से दूर नहीं हो जाते, तो उन्हें सज़ा से मार दिया जाएगा। ख़ुद कुरआन शरीफ में इन लड़ाइयों का कारण लिखा है। اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ ۙ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ यानी उन लोगों को अनुमति दी गई जिनकी हत्या के लिए विरोधियों ने चढ़ाई की। यह आज्ञा इसलिए दी गई कि उन पर अत्याचार हुआ और ख़ुदा तआला पीड़ित का सहायता करने पर सक्षम है। ये वे लोग हैं जो अन्यायपूर्ण तरीके से अपने देश से निकाले गएइन का गुनाह अस के अतिरिक्त कुछ न था कि कि अन्होंने कहा कि अल्लाह हमारा रब्ब है।

फरमाते हैं: यह वह आयत है जिस से इस्लामी युद्धों की श्रृंखला शुरू होती है। यह पहली आयत है जिसमें युद्ध की अनुमति थी फिर जितनी धूट इस्लामी युद्धों में देखोगे, युद्ध की अनुमति के बाद भी कुछ शर्ते हैं। फरमाया: "इन छूटों को युद्धों में देखोगे, यह संभव नहीं है कि वे मुसावी या यशूई लड़ाइयों में इस का उदाहरण मिल सके। मूसवी लड़ाइयों में लाखों बेगुनाह बच्चों का मारा जाना बुजुर्गों और महिलाओं की हत्या उद्यान और पेड़ों का जलाकर ख़ाक काला कर देना तौरात से साबित है लेकिन हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बावजूद इसके कि उन दुष्टों से वह सख़्तियां और कष्ट देखे थे जो पहले किसी ने नहीं देखा था फिर भी इन प्रतिरक्षा के युद्धों में भी बच्चों को कत्ल न करते, महिलाओं और बुजुर्गों को न मारते, भिक्षुओं से संबंध न रखने और खेतों और फल वाले पेड़ों को न जलाते और इबादतगाहों के विध्वंस न करने का आदेश दिया गया था।

आप फरमाते हैं: इज़राईली नबियों के ज़माने में जैसे दुष्ट अपनी कुटिलता की युक्ति से बाज न आते थे उस ज़माने में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विरोध में भी सीमा से बाहर गए थे। इसलिए उसी ख़ुदा ने जो दयालु और दया करने वाला ख़ुदा है, फिर दुष्टों के लिए इस में क्रोध भी है, उन को उन युद्धों के द्वारा जो उस ने उन्होंने पैदा की थीं सज़ा दी जाए।

आप फरमाते हैं "लूत की क़ौम से क्या व्यवहार हुआ।?" नूह के विरोधियों का क्या अंजाम हुआ? फिर मक्का वालों को इस रंग में सज़ा दी तो क्यों आक्षेप करते हो? क्या कोई अज़ाब निर्धारित है कि प्लेग ही हो या पत्थर बरसाए जाएं? ख़ुदा तआला जिस तरह चाहे अज़ाब दे दे। फरमाते हैं: अल्लाह तआला की पुरातन सुन्नत इसी प्रकार चली आ रही है कि अगर अदूरदर्शिता करने वाला आपत्ति करे तो उसे मूसा के समय और युद्धों पर आपत्ति का मौका मिल सकता है जहां नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में कोई अपवाद उचित नहीं रखी गई। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के युग पर आपत्ति नहीं की जा सकती। और आजकल बुद्धि का ज़माना है और अब यह आपत्ति कोई महत्त्व नहीं रख सकते क्योंकि जब कोई धर्मों से अलग होकर देखेगा तो उसे साफ नज़र आ जाएगा कि इस्लामी युद्ध में शुरू से आख़िर तक प्रतिरक्षा का गंतव्य है और हर प्रकार की रियायतें उचित रखी हैं। इसलिए अक़्ल की आंखों से देखना आवश्यक है और हमें उन्हें दिखाना चाहिए। आप कहते हैं मुझ से जब कोई आर्य या हिंदू इस्लामी युद्धों के बारे में पूछता है तो उसे नर्मी और सहूलत से यही समझाता हूं कि जो काफिर मारे गए वे अपनी ही तलवार से मारे गए जब उनके अत्याचारों की इंतिहा हो गई तो आख़िर उन्हें उन्हें दंडित किया गया और उनके हमलों को रोक दिया गया।

फिर आप फरमाते हैं: कुरआन शरीफ को सावधानी पूर्वक पढ़ो, तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि इस की यही शिक्षा है कि किसी के साथ हस्तक्षेप न करो जिन्होंने प्राथमिकता नहीं की उनके साथ उपकार करो। बिना किसी कारण के लड़ाई मत करो। जो पहले लड़ाई शुरू नहीं करते उनसे न केवल क्षमा करना है बल्कि उनसे एहसान का व्यवहार करो और शुरुआत करने वालों और अन्याय के विरुद्ध भी प्रतिरक्षा का लिहाज़ रखो सीमा से न बढ़ो। इस्लाम की शुरुआत में ऐसी कठिनाइयां थीं कि उनकी तुलना नहीं मिलती। एक के मुसलमान होने पर मरने मारने पर तैय्यार हो जाते थे। कुफ्फार में जब कोई मुसलमान हो जाता तो मरने मारने पर तैय्यार हो जाते थे। और हज़ारों फित्ने पैदा होते थे। और फित्ना तो कत्ल से भी बढ़कर है। अत: शांति की स्थापना के लिए मुकाबला करना पड़ा।

फिर आप फरमाते हैं: फिर और बातों के ग़ुलामी पर आरोप करते हैं हालांकि कुरआन शरीफ ने ग़ुलामों को स्वतंत्र करने की शिक्षा दी है और ताकीद की है और जो और किसी किताब में नहीं है। फरमाते हैं कि हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखो कि जब मक्का वालों ने आप को निकाला और तेरह साल तक हर प्रकार के कष्ट आप को पहुँचाते रहे आप के सहाबा को सख्त सख्त कष्ट दिए जिनके विचार से भी दिल कांप जाता है। इस समय जैसे धैर्य और सहनशीलता से आप ने काम लिया वह स्पष्ट बात है लेकिन जब ख़ुदा तआला के आदेश से आप चले गए और फिर फत्ह मक्का का मौका मिला तो उस समय उन पीड़ाओं और दुखों की कल्पना का विचार करके जो मक्का वालों ने तेरह वर्ष तक आप और आपकी जमाअत पर किए थे आप को हक पहुंचता था कि नरसंहार करके मक्का वालों को तबाह कर दिया जाए और इस हत्या में कोई विरोधी भी आप पर आपत्ति नहीं कर सकता था क्योंकि उनके कष्टों के लिए वह क़त्ल को योग्य हो चुके थे इसलिए अगर आप में ग़ज़ब की ताकत होती यानी क्रोध से ही काम लेना होता आप ने और बदले लेने होते और द्वैष रखने होते तो फत्ह मक्का का बड़ा अजीब मौका इंतकाम का था वे सभी गिरफ्तार हो चुके थे लेकिन आपने ने क्या किया, आप ने उन सब को छोड़ दिया और ने कहा कि ला तस्रीब अलैकुम अल्यौम।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अत: इस्लाम और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अगर ऐसे हालात में दया और करूणा का व्यवहार कहते हैं तो आजकल जबकि इस्लाम बतौर धर्म तलवार के ज़ोर से समाप्त करने की कोई सरकार और कोई शक्ति कोशिश नहीं कर रही तो फिर किस प्रकार ग़ैर-मुसलमानों को ज़ुल्म से मारा जाए जिन में निर्दोष बच्चे भी हैं, महिलाएं भी हैं बूढ़े भी हैं और पादरी भी हैं और धार्मिक नेता भी हैं। अत: हम भाग्यशाली हैं कि हमने इस युग के इमाम को स्वीकार कर लिया और सच्चे इस्लाम को पहचान लिया। दूसरे मुसलमान इस इंतजार में हैं कि कोई ख़ूनी महदी आएगा और फिर युद्ध का शुभारंभ करेगा लेकिन वह अपने इस विचार में हैं जिसने आना था वह आ गया और शांति ,प्यार और मुहब्बत से इस्लाम की सुन्दर शिक्षा को दुनिया में फैलाने के लिए एक जमाअत दुनिया में स्थापित कर गया। अत: आज हर अहमदी का कर्तव्य है कि ग़ैर मुसलमानों के मुंह भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा बताकर बंद कर दें और मुसलमानों को भी बता दें कि अब अगर तुम इस्लाम के विकास को देखना चाहते हो और उसका हिस्सा बनना चाहते हैं तो मसीह मुहम्मदी की जमाअत में शामिल होकर ऐसा किया जा सकता है, कोई अन्य तरीका नहीं है। कोई ख़ूनी महदी नहीं आना अब इस्लाम ने फैलना है और वास्तव में फैलना है और अपनी शांतिपूर्ण शिक्षा से फैलना है। इंशा अल्लाह

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: और अब

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 1 February 2018 Issue No. 5

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 300/- Per Issue: Rs. 6/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

दुनिया का अस्तित्व है तो इस में कि इस्लाम को स्वीकार करे। अब मुसलमानों ने अपनी तरक्की को देखना है तो इस मसीह तथा महदी के साथ जुड़कर देख सकते हैं इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं है, और वही मसीह और महदी है, जो अल्लाह तआला के वादे के अनुसार आया और जिस ने जमाअत का एक सिलसिला स्थापित किया। अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ अता करे कि हम पहले से बढ़कर इस्लाम की महानता को स्थापित करने के लिए अपनी सारी शक्तियों और अपनी क्षमताओं के साथ इस्लाम की तब्लीग़ करने वाले हों और दुनिया में इस्लाम की वास्तविक शिक्षा को फैलाने वाले हूँ। और दुनिया को बताएं कि आज अगर तुम्हारा अस्तित्व है इस्लाम में है, अन्यथा दुनिया विनाश के गड्ढे की तरफ जा रही है। यह तबाह हो जाएगी और इस को बचाने वाला कोई धर्म नहीं, और केवल इस्लाम धर्म है। अल्लाह तआला भी हमें भी इस की शक्ति प्रदान करे और विश्व को भी ज्ञान प्रदान करे। अब दुआ कर लें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ का यह ख़िताब 6 बजे तक जारी रहा इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह ने दुआ करवाई। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने जलसा सालाना की हाज़री का एलान करते हुए फरमाया इस साल जलसा सालाना की कुल हाज़री 41073 है जिसमें औरतों की संख्या 20455 है और पुरुषों की हाज़री 20618 है इसके अलावा जो तब्लीग़ी मेहमान शामिल हुए हैं उन की संख्या 1055 है।

इस जलसा में, 88 देशों का प्रतिनिधित्व किया गया और 6118 मेहमानों ने विभिन्न देशों से जलसा सालाना में शामिल हुए। इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार विभिन्न ग्रुपों ने दुआ पर आधारित नज़्में और तराने प्रस्तुत किए। सबसे पहले अफ्रीका के लोगों पर आधारित ग्रुप ने अपने विशेष रिवायती आवाज़ पर आधारित कलमा तय्यबा का विरद किया। फिर मैसेडोनिया देश के नए बैअत करने वालों ने मैसिडोनिया की भाषा में एक नज़्म अच्छी आवाज़ में पढ़ी।

इस कविता का अनुवाद नीचे है "मुझे एक ऐसी जगह का ज्ञान है जहां ख़ुदा तआला के सबसे बड़े बन्दे का विश्राम का स्थान है। हे परिन्दो ! यदि तुम मदीना के ऊपर से उड़ो तो हमारे प्रिय रसूल को हमारा सलाम कहना। हमारा दिल उन के लिए व्याकुल है। मैं एक ऐसी जगह जानता हूं जहां ख़ुदा तआला का एक प्यार करने वाला बन्दा आराम कर रहा है। हे परिन्दो ! यदि तुम कादियान के ऊपर से उड़ो तो हमारे हुज़ूर को सलाम कहना। मेरा दिल आप के लिए व्याकुल है।

मैं एक जगह जानता हूं जिस के बारे में सब कहते हैं कि वहां अल्लाह का एक बन्दा आता है हे परिन्दो अगर तुम जलसा सालाना के ऊपर से उड़ो तो हमारे प्रिय हुज़ूर को सलाम कहना। मेरा दिल आपके लिए व्याकुल है।

इसके बाद, स्पेनिश भाषा में अच्छी आवाज़ के साथ एक दुआ की नज़्म पेश की गई। इस के बाद, कार्यक्रम के अनुसार, जर्मन भाषा में एक तराना पेश किया गया इस के बाद कोसोवा देश से आने वाले अहमदी दोस्तों ने अपनी स्थानीय भाषा में तराना पेश किया। अंत में, जामिया अहमदिया जर्मनी के छात्रों ने अहदे वफा का सम्बन्ध के विषय और वफादारी पर आधारित एक नज़्म पेश की। बड़े ईमान वर्धन माहौल में ये नज़्में प्रस्तुत की जा रही थीं। जैसा ही यह कार्यक्रम अंत को पहुंचा, जमाअत के लोगों ने बड़े जोश, उत्तेजना से नारे लगाए, और सारा वातावरण नारों से गूंज उठा। हर छोटा बड़ा, युवा अपने प्रिय आक़ा के साथ अपने प्यार, वफादारी और महिमा को व्यक्त कर रहा था। यह जलसा के अंत के विदाई के क्षण थे और दिल प्यार और प्रेम से परिपूर्ण थे और आंखों रो रही थीं।

इस माहौल में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने अपना हाथ ऊंचा कर के अपने आशिकों को अस्सलामो अलैकुम और अलविदा कहा और नारों के साथ जलसा गाह से बाहर आए और कुछ देर के लिए अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए।

(शेष.........)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 7 का शेष

कष्ट वाला दिन वह था तो तायफ के सफर में उठाई। उस समय मैं बहुत दुखी हो कर सिर झुकाए हुए जा रहा था क्या देखता हूं कि एक बादल ने मुझे साया में ले रखा है। तब पहाड़ों के फरिशता ने मुझे आवाज़ दी और मुझे सलाम करके कहा कि पहाड़ों का फरिश्ता हूँ मुझे आप के रब्ब ने आप की तरफ भेजा है ताकि आप जो आदेश दें उसे मैं करूं हे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, क्या आप चाहते हैं कि मैं इस घाटी के ये सारे दोनों पहाड़ इन पर गिरा दूं । रहमत के नबी ने फरमाया नहीं नहीं ऐसा मत करो। मुझे उम्मीद है कि अल्लाह तआला इन की नस्लों से ऐसे लोगों को पैदा करेगा जो एक ख़ुदा की इबादत करेंगे और उसके साथ किसी को साझी नहीं ठहराएंगे। (बुख़ारी)

अपनी तक़रीर के अंत में आप सय्यदना हज़रत ख़लीफ़ुतल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के ख़ुत्बा जुम्अ: 8 सितम्बर 2017 ई से कुछ उपदेश प्रस्तुत किए। हुज़ूर अनवर फरमाते हैं: हमें अपने प्रचार की गतिविधियों में निरंतरता बनाए रखने की आवश्यकता है। यह नहीं कि साल में एक या दो बार सप्ताह दस दिन प्रशिक्षण के मना लिए, दस दिनों तब्लीग़ कर ली, सड़कों पर खड़े होकर साहित्य वितरण किया और समझ लिया कि प्रचार का हक़ अदा हो गया ... अल्लाह तआला ने ज्ञान और अच्छी सलाह और ठोस दलील के साथ जो प्रचार का आदेश दिया है तदनुसार पालन करना हमारा काम है और इसे निरंतरता के साथ करना हमारा काम है। उसके परिणाम, अल्लाह तआला ने फरमाया कि मैंने पैदा करने हैं। किस ने गुमराही में भटकते रहना है और किसने हिदायत पानी है, यह बातें अल्लाह तआला के ज्ञान में हैं ...हमारे से अगर पूछा जाएगा तो केवल इतना कि अल्लाह तआला ने हम से पूछना है कि क्या हमने संदेश पहुंचाया? या हम क्यों अपने प्रचार का हक अदा नहीं किया? और क्यों अल्लाह तआला के मार्गदर्शन का पालन नहीं किया? किस ने हिदायत पानी है और किसने हिदायत नहीं पानी, यह केवल अल्लाह तआला के ज्ञान में है अगर हम अपना कर्तव्य पूरा कर रहे हैं तो मरने के बाद दुनिया कम से कम अल्लाह तआला को यह नहीं कह सकती कि हमें तो इस्लाम का संदेश मिला ही नहीं था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: इस्लाम की रक्षा और सच्चाई दिखाने के लिए सबसे अव्वल तो वह पहलू है कि तुम सच्चे मुसलमानों का नमूना बनकर दिखाओ और दूसरा पहलू यह है कि उसकी ताकत और कमालात को दुनिया में फैलाओ। हुज़ूर अनवर ने फरमाया: अत: प्रचार के लिए भी अपनी अवस्थाओं में पहले पवित्र परिवर्तन पैदा करने की जरूरत है। एक सच्चे मुसलमान का नमूना जब इंसान बन जाए तो सवाल ही नहीं है कि लोगों का ध्यान पैदा न हो। लोग नमूनों को देख कर ही ध्यान देते हैं, और इस तरह नियमित प्रचार करने से पहले तब्लीग़ के रास्ते खुलने शुरू हो जाते हैं । अल्लाह तआला हमें इस के अनुसार कार्य करने की तौफीक दे। इस तक़रीर के बाद पहले दिन की पहली बैठक समाप्त हो गई।

## हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيلِ لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ
(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

# ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/ मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad